# गोस्वामी तुलसीदास

## डॉ. हरवंशलाल ओबराय

*सम्पादक एवं संकलनकर्ता*

**स्वामी संवित् सुबोधगिरि**

**डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र**

खण्ड 1 : राष्ट्रीय समस्याएं और इतिहास

खण्ड 2 : महापुरुष : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

खण्ड 3 : धर्म-दर्शन-संस्कृति-उत्सव-विज्ञान एवं मनोविज्ञान

खण्ड 4 : वेदान्त दर्शन की वैज्ञानिकता

खण्ड 5 : गीता दर्शन की सार्वभौमिकता

*प्रकाशक एवं वितरक :*
**स्वामी संवित् सुबोधगिरि**
श्री नृसिंह भवन
**संन्यास आश्रम, शिव मन्दिर**
भीनासर 334403
बीकानेर (राजस्थान)
मो. : 09413769139

*अन्य पुस्तक प्राप्ति स्थान :*

- श्री सुशील कुमार ताम्बी
  **प्रज्ञा साधना आध्यात्मिक पुस्तक केन्द्र**
  A/3 आर्य नगर
  एन.के. पब्लिक स्कूल के पास
  मुरलीपुरा, जयपुर 302039
  फोन : 0141-2233765
  मो. : 09829547773

- **ज्ञान गंगा प्रकाशन**
  पाथेय भवन,
  बी-19, न्यू कॉलोनी, जयपुर
  दूरभाष : 0141-2371563

- **अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना**
  आप्टे भवन, केशव कुंज, झण्डेवाला
  नई दिल्ली 110055
  फोन : 011-23675667

- **जागृति प्रकाशन**
  श्री कृष्णानन्द सागर
  एफ-109, सेक्टर-27, नोएडा 201301
  दूरभाष : 0120-2538101
  मो. : 09871143768



प्रथम संस्करण : 2013 ई.

प्रतियां : 500

मूल्य : पचास रुपये मात्र

आवरण : गौरी शंकर आचार्य

मुद्रक :
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

GOSWAMI TULSIDAS : Dr. Harbans Lal Oberai (Hindi)
Edited by Swami Samvit Subodhgiri ₹ 50

# प्रकाशकीय

गोस्वामी तुलसीदास पर प्रथम चार लेख, इसके अलावा राणा प्रताप को नैतिक बल प्रदान करने वाले सन्त श्रीचन्द्र एवं महर्षि वेदव्यास का राष्ट्र दर्शन डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र के द्वितीय खण्ड से और गोस्वामी तुलसीदास पर भाषण पुरुलिया में डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र के चतुर्थ खण्ड से संकलित है। परम पूज्य गुरुदेव स्वामी संवित् सोमगिरि महाराजजी के आशीर्वाद तथा सांखला प्रिंटर्स के प्रिंटिंग कार्य में सौहार्दपूर्ण सहयोग से प्रकाशित हो रहा है।

शिवाकांक्षी

**—स्वामी संवित् सुबोधगिरि**

सम्पादक व संकलनकर्ता

मो. 09413769139

# अनुक्रम

# तुलसीदास : भक्तिमार्ग के अमर संवाहक

कोई भी राष्ट्र अपनी प्राचीन संस्कृति की धरोहर को भुला नहीं सकता। ज्ञान के अमर भंडार को जिसमें धर्म, दर्शन, कला और साहित्य बहुत सुन्दर ढंग से संजोये होते हैं, भूलना या इसकी रक्षा न करना अक्षम्य होता है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में कुछ समय ऐसा भी रहा है जब विदेशी आततायी शक्तियों ने भारत पर अपना शासन स्थापित कर लिया जिसके फलस्वरूप कुछेक भारतवासियों ने इन विदेशी शक्तियों के सामने घुटने टेक दिए। ऐसे ही क्षणों में जब दासता, आपसी झगड़े, धर्म, जाति के नाम पर संघर्ष और मुस्लिम शासकों की बन्दूक और तलवार के बल पर दमन-नीति बढ़ी हुई थी, निजी स्वार्थ और अज्ञान बढ़ रहा था, उस समय भारत के क्षितिज पर एक ऐसी किरण का उदय हुआ जिसने कालान्तर में भारतीयों को झकझोर कर विदेशी दासता एवं शारीरिक और मानसिक तमस से जगाया। उसके शब्दों ने मुरझाए चेहरों को नई शक्ति दी और डूबते हुए राष्ट्र को सहारा दिया। उनके संदेश से इस धरा पर एक नयी चेतना आ गई और पूरा विश्व संगीतमय दोहों और चौपाइयों के स्वर से गुंजित हो उठा। वे हमारी संस्कृति के महान् रक्षक थे और उन्होंने हमारे धर्म और विश्वास को एक नयी दिशा दी।

प्रख्यात सन्त-कवि—तुलसीदास, जो गोस्वामी तुलसीदास के नाम से प्रसिद्ध थे, वे आध्यात्मिक जागरण के महान् सन्देशवाहक थे, जिनकी विचारधारा का प्रभाव न केवल भारत, अपितु अनेक राष्ट्रों पर भी पड़ा। वे एक कवि एवं दार्शनिक, श्रेष्ठ संत एवं धार्मिक गुरु और समाज-सुधारक थे। उन्होंने भारतीय दार्शनिक एवं धार्मिक विचारधारा पर बहुत प्रभाव डाला। प्रख्यात पश्चिमी विद्वान् डॉ. ग्रियर्सन जिन्होंने भारतीय साहित्य का विपुल अध्ययन किया है, तुलसीदास को भगवान् बुद्ध के बाद सबसे महान् सांस्कृतिक नायक मानते हैं, जिन्होंने अगली कई शताब्दियों के लिए दर्शन एवं सांस्कृतिक विचारधारा पर अपना प्रभाव छोड़ दिया है। उनकी प्रेरणा और विचारधारा का प्रभाव इतना प्रबल और विस्तृत है कि तुलसी रामायण का पाठ बड़े-बड़े महलों से लेकर गरीब की झोंपड़ी तक बड़ी श्रद्धा व आस्था से होता है।

भारत के इस महान् सपूत का जन्म श्रावणी शुक्ला सप्तमी, विक्रम संवत् 1554 में हुआ था। कुछ हिन्दी साहित्य ग्रन्थों में उनका जन्म विक्रम संवत् 1589 में भी दिखाया गया है। यह खेद की बात है कि पक्के ऐतिहासिक ज्ञान और आधार के बिना हिन्दी साहित्य के इस महान् लेखक का जन्म स्थान अभी तक ठीक प्रकार से निर्धारित नहीं किया गया है। किन्तु आधुनिक प्रमाणित साहित्य और प्रपत्रों के आधार पर यह माना जाता है कि तुलसीदास स्वयं एक शुक्ल संध्या ब्राह्मण थे, जो भारद्वाज गोत्र के आत्माराम दुबे और हुलसी (सोरन, ईटावा जिला उत्तर प्रदेश के निवासी) के पुत्र थे।

तुलसीदास के जीवन में अचानक एक मोड़ आया जिसने उनकी जीवनधारा पूर्णतया बदल दी। उनकी पत्नी रत्नावली ने एक दिन अत्यधिक मोह-ममता और कामवासना के विषय में उनकी काफी भर्त्सना की। उसकी डांट-डपट ने तुलसीदास के मन में एक बड़ा परिवर्तन ला दिया—

**अस्थि-चर्म मय देह मम्, तामें ऐसी प्रीति।**
**तैसी जो श्रीराम महं, होति न तौ भव-भीति।।**

अर्थात्, आप मेरे हाड-मांस के शरीर में जितनी प्रीति रखते हैं, वैसा ही प्रेम यदि श्रीराम के लिए हो तो आपके सब भव-संकट दूर हो जाएंगे।

यह वाक्य तुलसीदास के मन में एक जादू की तरह समा गया। वे उसी क्षण से भगवान् राम के परम भक्त बन गए। कई महान् संतों की जीवनी पढ़ने से हमें दिखता है कि छोटी सी घटना से उनके जीवन में एक नया मोड़ आ गया। जैसे एक घटना ने क्रूर मानसिक वृत्ति वाले रत्नाकर डाकू को महर्षि वाल्मीकि बना दिया, भोग विलास में लिप्त राजकुमार सिद्धार्थ को महात्मा बुद्ध, मोटी बुद्धि वाले व्यक्ति को कालिदास, बंगाल के घोर नास्तिक नरेन्द्र बाबू को स्वामी विवेकानंद, सरल प्रकृति बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द, बिगड़े हुए वकील मोहनदास को महात्मा गांधी बनाया, उसी प्रकार एक घटना ने कामवासना में लिप्त तुलसीदास को गोस्वामी तुलसीदास बना दिया।

एक कवि परमात्मा का महान् संदेशवाहक होता है। उसकी कला निष्प्राण और बेकार होगी, यदि वह केवल कल्पना के महलों में बंद रहे। तुलसीदास का साहित्य भारतीय संस्कृति में स्वर्णिम शब्दों में लिखा गया है। हिन्दी भाषा के अग्रणी काव्य-रचयिता होने के कारण वे भारतीय संस्कृति एवं साहित्यिक इतिहास में अद्वितीय स्थान रखते हैं।

### रहस्यवाद

तुलसीदास मुख्यतः एक धार्मिक शिक्षक और रहस्यवादी विद्वान् थे, क्योंकि

सभी धार्मिक सिद्धान्त किन्हीं रहस्यवादी धारणाओं पर आधारित होते हैं। यहाँ पर तुलसीदास की 'सर्वोच्च शक्ति : ईश्वर' के बारे में विचार ध्यान देने योग्य है। वे रामानुजाचार्य की विशिष्टाद्वैत धारणा से प्रभावित थे और मानते थे कि सर्वोच्च शक्ति, जो पूरे विश्व की नियन्ता है, केवल एक ही स्रोत से सृजित हुई है। वे अद्वैत मार्ग के उपासक थे। यही ब्रह्म के रूप में परम शक्ति और विचारधारा भारत की पुण्यभूमि से पूर्णतः जुड़ी हुई है।

इस प्रकार तुलसीदास भक्ति-मार्ग का सुन्दर मार्गदर्शन करते हैं—

**सगुनहि अगुनहि नहीं कछु भेदा, गावहीं मुनि पुरान बुद्ध वेदा।**

वे जीवात्मा की परम सत्ता के विषय में शंकराचार्य की विचारधारा मानते हैं कि हर जीव केवल परम शक्तिमान ईश्वर का ही प्रतिरूप है—

**ईश्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी।।**

वे समझाते हैं कि जब जीव अपने भीतर उस अजर-अमर अविनाशी शक्ति का आभास कर लेता है तो जीवात्मा, परमात्मा के साथ एकरूप हो जाती है—

**जानत तुम्हहि, तुम्हइ होइ जाई।**

शंकराचार्य की तरह तुलसीदास भी परमात्मा और जीवात्मा का अंतर और सब दुःखों का कारण माया को ही मानते हैं। किन्तु जहाँ शंकराचार्य माया को सब अज्ञान का मूल कारण समझते हैं, तुलसीदास माया को ब्रह्म की सृजन शक्ति मानते हैं। वे मानते हैं कि सारी सृष्टि ब्रह्म और माया के सहयोग से ही बनी हुई है, लेकिन ब्रह्म की तरह माया पूर्णतया स्वतंत्र नहीं है, माया ब्रह्म की दासी के समान है और उसी की इच्छानुसार कार्य करती है। इसलिये ब्रह्म को मायापति मानते हैं। ब्रह्म अपनी कृपा से अज्ञान या माया को एक क्षण में समाप्त कर सकते हैं।

तुलसीदास की सोच, मनन, अद्वैतवाद से थोड़ी भिन्न है। वे मानते हैं कि ब्रह्म का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने से जीवात्मा ब्रह्म से एकात्म हो जाता है किन्तु वह पूर्ण ब्रह्म नहीं बन जाता। तुलसीदास ने भक्ति मार्ग का पुरजोर समर्थन किया। जिसके अन्तर्गत ब्रह्म और जीव का एकात्म पूरी तरह नहीं होता। यदि ब्रह्म और जीव वस्तुतः एक ही हैं तो जीव द्वारा ब्रह्म की उपासना का कोई औचित्य नहीं रहता।

**नैतिक गुण**—किसी राष्ट्र की एकता और अखंडता उसके सुदृढ़ नैतिक गुणों पर ही आधारित होते हैं। जब कभी नैतिक मूल्यों में गिरावट आई, सामाजिक व्यवस्था निष्क्रिय व निर्जीव सी हो जाती है। तुलसीदास ने राष्ट्र एवं समाज की वास्तविक शक्ति को अच्छी प्रकार समझा और मुख्य नैतिक गुणों को सरल 'अवधी' भाषा में काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया।

तुलसीदास एक प्रबुद्ध संत थे। वे समझाते हैं कि कर्म का फल उसकी अन्तर्निहित भावना पर आश्रित होता है।

**जिन्ह के रही भावना जैसी,**
**प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी॥** मानस, 1/240/4

वे एक महान् कर्मयोगी थे, कर्म की प्रधानता को बहुत मानते थे।

**करम प्रधान बिस्व करि राखा।**
**जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥** मानस, 2/218/4

वे कट्टर सत्यनिष्ठ थे। सत्य सर्वोच्च नैतिक गुण है वे मानते थे—

**सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।**
**जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप॥**

मानव में संवेदना और करुणा भाव के विषय में वे कहते हैं—

**दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।**
**तुलसी दया न छोडिये जब लग घट में प्राण॥**

तुलसीदास कहते हैं कि कोई वचन देकर या आश्वासन देकर उससे पीछे नहीं हटना चाहिए।

**रघुकुल रीति सदा चलि आई।**
**प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई॥** मानस, 2/27/4

**सामाजिक गुण**—यह खेद का विषय है कि हमारे समाज से धर्म और पारंपरिक धार्मिक क्रियाएं घटती जा रही हैं। विशेषतया भारत में धार्मिक उपदेशों के स्थान पर स्वार्थवादी शक्तियाँ उभर रही हैं।

तुलसीदास ने कभी स्वार्थवादी, भौतिकवादी धर्म नहीं सिखाया। वे आम जनता के कवि थे अतः सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को बहुत महत्त्व देते थे। उनके अनुसार गृहस्थ नैतिक गुणों को सीखने की सर्वोत्तम पाठशाला है। वे गृहस्थ में पत्नी का कर्तव्य समझाते हैं।

**सादर सास ससुर पति पूजा।**
**नारी धरम कछु और न दूजा।**

अच्छे सुसंस्कृत पुत्र के कर्तव्य भी उनकी प्रखर सूझ-बूझ के बाहर न थे।

**सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी।**
**जो पितु मातु बचन अनुरागी॥** मानस, 2/41/7

सच्चे मैत्री धर्म को उन्होंने सुन्दर ढंग से समझाया है—

**जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।**
**तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥** मानस, 4/6/1

तुलसीदास द्वारा बताई गई सच्ची मैत्री सदा ही समय की कसौटी पर खरी उतरी है।

**धीरज धर्म मित्र अरु नारी।**
**आपद काल परिखि अहिं चारी॥** मानस, 3/4/7

तुलसीदास के अनुसार आध्यात्मिक शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। पूर्णज्ञान प्राप्त करने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है—

**गुरु बिन भव निधि तरहीं न कोई**

उदारता एवं दान देने के महत्त्व को तुलसीदासजी इस प्रकार बताते हैं।

**तुलसी या संसार में कर लीजो दो काम।**
**देने को टुकड़ो भलो, लेने को हरि नाम॥**

तुलसीदास उच्च कोटि के नैतिक सन्त थे। वे सबमें प्यार, भाईचारे और ईश्वर में पूर्ण निष्ठा का उपदेश देते थे। वे हर प्राणी में प्रभु का दर्शन करते थे।

**तुलसी या संसार में सबसे मिलिये धाय।**
**न जाने किस रूप में नारायण मिल जाय॥**

तुलसी को मानव मनोविज्ञान का पूरा ज्ञान था। इसलिए वे अच्छी संगति-सत्संग का विशेष महत्त्व मानते थे।

**एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आध।**
**तुलसी संगत साधु की हरे कोटि अपराध॥**

तुलसीदास के व्यक्तित्व और उपदेशों पर मनन करने से यह स्पष्ट होता है कि वे भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान में अग्रणी थे, वे सामाजिक जागरण के नायक थे। कई महापुरुषों ने राष्ट्र निर्माण में बहुत योगदान दिया है, इनकी कीर्ति इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों से लिखी है। इन महापुरुषों में तुलसीदास का विशेष स्थान है। उनका पूरी मानवता के लिए और विशेष भारत के कल्याण कार्य में इतना महान् और अद्वितीय योगदान है कि उनका नाम सदैव अमर रहेगा।

**जाके प्रिय न राम-बैदेही।**
**तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।।1।।**
**तज्यो पिता प्रहलाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी।**
**बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज-बनितन्हि, भये मुद-मंगलकारी।।2।।**
**नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेब्य जहाँ लौं।**
**अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं।।3।।**
**तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो।**
**जासों होय सनेह राम-पद, एतो मतो हमारो।।4।।**

**—श्री गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित**
विनय पत्रिका, पद-संख्या 174

# गोस्वामी तुलसीदास का राजनीतिक दर्शन

कोटिशः वन्दित, जनगण पूजित श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी की आध्यात्मिक, साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक देन के विषय में तो विश्वभर के हिन्दी विद्वान् एकमत हैं। साहित्य एवं संस्कृति के सूर्य गोस्वामी तुलसीदास की कुछ राजनीतिक क्षेत्र में भी महान् देन है। इस विषय में अभी बड़े-बड़े इतिहासकार भी संशयग्रस्त हैं।

श्री इन्द्र विद्या वाचस्पति जैसे प्रख्यात लेखक भी समय-असमय लिख बैठते हैं कि तुलसीदास को राजनीति के विषय का कुछ ज्ञान न था। उनके लिए तो 'कोउ नृप होऊ हमहि का हानी।' तुलसी की राजनीतिक बेहोशी का यह चित्र बड़ा अन्यायपूर्ण है।

श्री रामधारी सिंह दिनकर जैसे सुलझे हुए विद्वान् भी इसी भ्रान्ति के शिकार हैं। 'संस्कृति के चार अध्याय' में वे लिखते हैं—

इस काल (भक्ति-काल) में सन्तों और कवियों को यह जानने की तनिक भी उत्सुकता नहीं थी कि देश में राज्य किसका चल रहा है? वे हरि भजन में मस्त हैं और जनता में भक्ति भावना का प्रचार कर रहे हैं। उनमें भक्ति के लिए उत्साह तो है किन्तु विदेशियों को भगाने की तनिक भी चिन्ता नहीं। तुलसीदास और राणा प्रताप कुछ समय के लिए समकालीन थे किन्तु तुलसीदास ने राणा प्रताप का नाम भी सुना था या नहीं, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता।'

गोस्वामी तुलसीदासजी चाहे प्रत्यक्षतया राजनीति के क्षेत्र में नहीं आए तथा न ही राजनीति उनकी जीवन दिशा थी फिर भी भारतीय जनगण के उस काल में एकमात्र प्राणरक्षक होने के कारण वे राजनीतिक गतिविधियों से पूर्णतया अछूते नहीं रह सकते थे।

भारत का सच्चा इतिहास केवल राजाओं, रानियों, युद्धों और अत्याचारों का किस्सा मात्र नहीं है। जो इतिहास आजकल हमारे बच्चों को इतिहास के नाम पर पढ़ाया जाता है उसमें कुछ विलासी अथवा अत्याचारी राजाओं-रानियों के ही किस्से हैं। इस भारत के इतिहास में हमें भारत के दर्शन बिल्कुल नहीं होते। समाज

की क्या अवस्था थी, यह किंचित मात्र भी ज्ञात नहीं होता। साहित्य ही समाज का सच्चा दर्पण है। यदि साहित्य सम्राट् तुलसीदास का साहित्य सच्चा साहित्य है तो उसमें भारतीय समाज का चित्र प्रतिबिम्बित है। केवल पहचान की आंख चाहिए। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में वह काल एक भीषण संकट बनकर आया था। वैसे तो भारत में पहले ही कई आक्रमणकारी आ चुके थे, किन्तु वे भारतीय समाज में घुल-मिल गए थे। मुस्लिम आक्रमण के साथ भारत की सीमाओं के भीतर पहली बार ऐसे लोग आकर बसने लगे थे, जो आचार, विचार, धार्मिक आस्था तथा सांस्कृतिक आदर्श—सभी में भारतीय समाज से भिन्न थे तथा जो न अपनी भिन्नता को त्यागने के लिए राजी थे और न ही भारतीयों को स्वयं अपनी भिन्नता को रखते हुए अपने आचार धर्म पर चलने की छूट तक देने के लिए तैयार थे, वरन् वे तो इस धरती का खाते-पीते, किसी अन्य देश तथा धर्म में आस्था रखते हुए इस धरती के बेटों को भी तलवार की नोक से अपने धर्म और संस्कृति का गुलाम बनाने के लिए कटिबद्ध थे। गोस्वामी तुलसीदास ने दूरदर्शिता से देख लिया कि हिन्दुत्व का नाश होने से भारतीयता का नाश हो जाएगा और भारत का नाश होने से विश्व मानवता का विनाश हो जाएगा।

**रक्त की वर्षा**

गुरु नानकदेवजी गोस्वामी तुलसीदास के पूर्वगामी थे तथा कुछ वर्षों के लिए उनके समकालीन भी माने जाते हैं, उन्होंने अपनी वाणी में उस युग के भयानक चित्र का संकेत दिया है—

**कलि काली, राजे कसाई, धर्म पंख धरि उड़ि रह्या।**
**कूड़ अमावस सच चन्द्रमा, दीसे नहीं कहीं चढ़्या।।**

अर्थात्, जहाँ युग छुरे की धार है, राजे कसाई हैं, धर्म उड़ गया है और झूठ की काली अमावस में सत्य का चन्द्रमा कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता, वहाँ जनसाधारण की कितनी दुर्गति होती होगी? गुरु नानक लिखते हैं कि 'हत्या के गीत गाए जाते हैं। केसर के स्थान पर रक्त की वर्षा होती है। साक्षात् मौत ने ही बाबर के रूप में भारत पर आक्रमण किया। यह घोर कलियुग है, सत्य बोलने वालों को सताया जाता है और भगवान् का नाम लेने वालों को समाप्त कर दिया जाता है।'

प्रसिद्ध यूरोपीय इतिहासकार डॉ. फर्कुहर ने लिखा है कि 16वीं सदी में हजारों सशस्त्र मुस्लिम फकीर घूमा-फिरा करते थे। वे युद्धों में भी भाग लेते थे। जब युद्ध नहीं होते तो वे अपने धार्मिक जोश में हिन्दू संन्यासियों के मठों पर हल्ला बोल देते थे और उन्हें कत्ल कर देते थे। काशी के प्रसिद्ध धर्मगुरु स्वामी मधुसूदन सरस्वती ने इस बारे में अकबर से शिकायत भी की थी।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने लगभग सवा सदी के लम्बे जीवनकाल में आगरा तथा दिल्ली के सिंहासन पर लगभग छः शासकों का शासन देख लिया था।

बचपन में उन्होंने वीर राणा सांगा की मृत्यु देखी। बाबर और हिमाँयु का राज्यकाल अपनी युवावस्था में देखा। बाद में उन्होंने शेरशाह और अकबर का शासन देखा और वृद्धावस्था में जहाँगीर और शाहजहाँ का राज्यकाल भी देखा और उनके अत्याचारों को भी देखा। और विशेषकर अकबर की कूटनीति को भी देखा। वह साम, दाम, दण्ड, भेद के द्वारा राजपूत समाज को अपना वशवर्ती बना रहा था। वे दिल्लीश्वरों वा जगदीश्वरों कहने में ही अपना आत्महित तथा अपनी विद्या-बुद्धि की सार्थकता समझने लगे थे। ऐसी भयावह स्थिति में गोस्वामी तुलसीदास एक आशा की किरण के रूप में उभरे। और रामराज्य का आदर्श समाज के सामने रखा।

### आर्थिक दुर्दशा

गोस्वामीजी ने 'कवितावली' में उस काल की आर्थिक दशा का हृदय विदारक चित्र खींचा है—

**खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली,**
**वनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।**
**जीविकाविहीन लोग सीद्यमान सोच बस,**
**कहैं एक एकन सों, कहाँ जाई का करी?**
**दारिद दसानन दबाई दुनी दीनबंधु!**
**दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।**

अर्थात् किसान को खेती नहीं थी, नौकर को नौकरी नहीं मिलती थी, भिखारी को भीख नहीं मिलती और व्यापारी को व्यापार नहीं था। बेकार हुए लोग दुःखी मन होकर एक-दूसरे से पूछते थे—कहाँ जायें, क्या करें? गरीबी का राक्षस रावण सबको काल का ग्रास बनाकर खा जाना चाहता है। ऐसी पाप की भीषण ज्वाला को देखकर तुलसीदास प्रभु से कृपा के लिये प्रार्थना करता है।

### नैतिक पतन

**उँचे-नीचे करम, धरम, अधरम करि,**
**पेट ही को पचत, बेचत बेटा बेटकी।**

अर्थात् लोग पेट भरने के लिये सब ऊँचे-नीचे कर्म, धर्म-अधर्म करते अपने बच्चों को भी बेच देते हैं। यह समाज के नैतिक पतन और निराशा का चित्र है।

पारिवारिक आदर्शों के लुप्त हो जाने से—

**सुत मानहिं मातु पिता तब लौं, अबलानन दीख नहीं जब लौं।**
**ससुरारि पियारि लगी जब तें, रिपुरूप कुटुम्ब भये तब तें।**

अर्थात् पुत्र माता-पिता का तभी तक आदर सत्कार करते हैं जब तक उसे अपनी पत्नी का चेहरा नहीं दिखता। फिर बाद में उसे ससुराल प्यारा लगता है। अपने माता-पिता, भाई-बहिन शत्रु तुल्य लगते हैं।

## भीख की प्रथा

तुलसी के शब्दों में—

**मातु पिता बालकन्हि बोलावहिं।**
**उदर भरै सोई धर्म सिखावहिं।**

निर्धनता एवं अकर्मण्यता के कारण समाज में भिक्षा मांगना शुरू हो गया था। माता-पिता बच्चों को बुलाकर पेट भरने के लिये उन्हें भिक्षा मांगने की कला सिखाते हैं।

## स्वेच्छाचारी राजे

उस काल के शासन का चित्र भी आंखें खोलने वाला है—

**नृप पाप परायण धर्म नहीं। करि दण्ड बिडंब प्रजा नित ही।।**

अधिकांश राजे एवं नवाब अधर्मी, पापाचारी एवं अनैतिक हो गये थे। अनैतिक राजा धर्म को भूलकर प्रजा को दण्ड और बल से सताते हैं।

वे पुनः लिखते हैं—

**कालु कराल, नृपाल कृपाल न। राज समाजु बड़ोई छली है।।**

एक अन्य प्रसंग में तुलसीदास जी कहते हैं—यह बड़ा कराल समय है, जब राजा क्रूर हो जाते हैं। न्यायालय, मंत्री, कर्मचारी सब भ्रष्ट हो गये हैं।

गोस्वामीजी दारुण दुःख से कहते हैं—

**वेद-धर्म दूरि गये, भूमि चोर भूप भये।**
**साधु सीद्यमान जानि रीति पाप पीन की।।**

अर्थात् वैदिक धर्म समाप्त हो गया, चोर, डकैत राजा बन गये हैं। सज्जन दुःखी है। पाप पनप रहा है।

## डाके और कत्ल

उस काल के डाके और हत्याओं का स्मरण कर दिल दहल जाता है—

**मारग मारि, महीसुर मारि कुमारग कोटिक कै धन लीयो।**
**संकर कोप सों पाप को दाम परीच्छित जाहिगो जारिके हीयो।**

जो राहगीरों की हत्या करते हैं, साधुओं को मारते हैं या अनुचित ढंग से पैसा बटोरते हैं।

गोस्वामीजी की ऐसे डाकुओं को चेतावनी है कि याद रखो शंकर के कोप से पाप का पैसा तुम्हारे हृदय को जलाकर बाहर निकालेगा। यह पक्का परीक्षित नियम है।

### राष्ट्रीय चरित्र का अभाव

राजनीतिक अचेतनता तथा राष्ट्रीय चरित्र के अभाव के कारण लोग अवसरवादी बन गये थे। मंथरा के निम्न वचनों में कर्तव्यशून्य अवसरवादियों की प्रसिद्ध युक्ति है—

**कोउ नृप होऊ हमहि का हानी।**
**चेरी छांड़ि अब होब की रानी।।** मानस, 2/15/6

कुबड़ी मंथरा की इसी उक्ति के अनुरूप अनेक राजपूत सैनिक यही युक्ति देते थे कि हमें केवल सेवा करनी है। चाकरी चाहे प्रताप की हो या अकबर की—हमें तो लड़ना ही है। हमें कोई राज तो करना नहीं।

### गुलामी को लानत

गुलामी की रोटियों पर पलने वाले लोगों को गुलामी से ही प्यार हो चला था। गोसाईंजी ने हृदयस्पर्शी चित्र खींचा है—

**हम पंखपाई पींजरनि तरसत अधिक अभाग हमारी।**

मुक्ति की स्वतंत्र उड़ान के लिये समर्थ पंख होते हुए भी हम (पंछी) पिंजरे के घृणित सुखों के लिये तरस रहे हैं, यह हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य है।

### स्वातंत्र्य मंत्र

गोसाईंजी ने भारत को मुक्ति मंत्र दिया—

**पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।**

पराधीन होकर रहना एक पाप है। ऐसा व्यक्ति स्वप्न में भी सुख नहीं पा सकता।

वे पुनः चेतावनी देते हैं—

**अरि बस दैउ जिआवत जाही।**
**मरनु नीक तेहि जीवन चाही।।** मानस, 2/20/2

अर्थात् दैव जिसको शत्रु के वश में रख कर जिलाता है, उसके लिए तो जीने की अपेक्षा मरना ही अच्छा है।

**वीर व्रत**

वीर व्रत की महिमा राष्ट्र रक्षा के लिए है—

**निसिचर हीन करउँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह।**

**आदर्श राजा**

**जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवस नरक अधिकारी।**

तुलसी के रघुपति राघव राजा राम के गायन ने हमें राम जैसे आदर्श राजा का स्मरण दिलाया जो सब प्रकार से दैत्यों का नाश करने वाले हैं—

**दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि ब्यापा।।**

**प्रजातंत्र**

राम जैसे आदर्श राजा भी प्रजा से कहते हैं—

**जो अनीति कछु भाषौ भाई, तो मोही बरजहु भय बिसराई।।**

एक चक्रवर्ती सम्राट् द्वारा सामान्य प्रजाजनों को खुलेआम यह अधिकार देना कि यदि वह भूल से कभी अनीति का शब्द बोल दे अथवा अनीतिपूर्ण कर्म करने लगे तो प्रजाजन निर्भय होकर सम्राट को भी वर्जित कर दें—एक बहुत बड़ा लोकतान्त्रिक आदर्श है।

**सत्याग्रह**

जब रावण सीता को बहुत डराता है तो सीता सत्याग्रह की वाणी में कहती है—

**स्याम सरोज दाम सम सुन्दर।**
**प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।**
**सो भुज कंठ कि तव असिघोरा।**
**सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा।** मानस 5/9/3

सीताजी ने कहा—हे दशग्रीव! प्रभु की भुजा जो श्याम कमल की माला के समान सुन्दर और हाथी की सूँड के समान पुष्ट तथा विशाल है, या तो वह भुजा ही मेरे कण्ठ में पड़ेगी या तेरी भयानक तलवार ही। रे शठ! सुन, यही मेरा सच्चा प्रण है।

**भारत माँ के बेटे : सगे भाई**

हल्दीघाटी के युद्ध में राणा प्रताप ने देखा कि मुगल सेनापति होकर मानसिंह आया है। उसे देखते ही प्रताप ने क्रुद्ध होकर कहा—'पापी! अपनी माँ-बहिन को यवनों को देने वाले, देशद्रोही, जातिद्रोही, आज तुम्हारा मान मर्दन करके ही

छोड़ूंगा।' चेतक को देखते ही मानसिंह पलायन कर गया। शाहजहाँ सलीम किसी प्रकार घोड़े पर से किए प्रताप के भाले के वार से बच गया। मानसिंह और सलीम तो बच गये, किन्तु महावत मारा गया और हाथी युद्धक्षेत्र छोड़कर भाग गया। बड़ा अपमान हुआ मानसिंह का। मानसिंह ने प्रतिज्ञा की कि अब एक विशाल सेना लेकर राणा प्रताप का सर्वनाश करके छोड़ूंगा।

उस समय राजधानी आगरा में थी और आगरा की एक धर्मशाला में तुलसीदासजी की रामायण कथा चल रही थी। उन्हें जब यह जानकारी मिली कि मानसिंह ने इस प्रकार की प्रतिज्ञा की है, तब उन्होंने अपना व्यक्ति भेजकर मानसिंह को बुलाया। पर मानसिंह के पास समय कहाँ? तथापि मानसिंह एक दिन कथा सुनने आया। तुलसीदासजी रामायण का प्रसंग कहते-कहते एक अन्य प्रसंग कहने लगे। भगवान् राम ने लंका विजय के पश्चात् हनुमान, सुग्रीव, विभीषण को साथ लेकर अयोध्या में प्रत्यावर्तन किया। तब भगवान् राम ने भरत के समक्ष सुग्रीव एवं विभीषण की प्रशंसा की। सुग्रीव के संबंध में कहा, 'मैंने अग्नि को साक्षी करके इसके साथ मित्रता की है। यदि यह मित्रता न होती तब हनुमान भी नहीं मिलते, वानर सेना भी हमारे पक्ष में नहीं आती, लंका विजय भी नहीं होती, सीता वापस नहीं आती। अतः सुग्रीव मेरा बहुत प्रिय मित्र है। यह विभीषण तो लंकापति दशानन का भाई है। यदि विभीषण यह भेद नहीं बताता कि रावण के पेट में अमृत कुंभ है, तब रावण तो मरता नहीं। इन दोनों ने ही मेरी सहायता की है। इनके सहयोग से ही हम लोग सकुशल वापस लौटकर आ सके हैं।

**राम सराहे भरत उठी मिले राम सम जानि।**
**तदपि विभीषण कीसपति तुलसी मरत ग्लानि।।**

राम ने तो सुग्रीव तथा विभीषण को मित्र बताया और भरत उन्हें राम के समान पूज्य समझकर ही उनको प्रणाम करने के लिए आगे बढ़े, किन्तु विभीषण और सुग्रीव दोनों ग्लानि से मर रहे थे कि कहाँ भरत जैसे पूज्य भाई जिन्होंने निष्कटंक राज्य हाथ में पाकर भी राजधानी से दूर नन्दीग्राम में योगी-मुनि की तरह जटामण्डित होकर, भूमिशयन कर, सिंहासन पर पादुका स्थापित कर राज्य का संचालन किया और कहाँ हम अपने-अपने स्वार्थों के लिये सगे भाइयों को मरवाने वाले बने। इसलिये भरत जब उन्हें प्रणाम करने जा रहे हैं, तब वे ग्लानि एवं अपराधबोध से दबे जा रहे हैं। ठीक वैसे ही तुलसीदासजी के पाठ में बैठे हुए मानसिंह के मन का चोर पकड़ा गया। तुलसीदासजी ने कहा—आज भी देश की यही अवस्था चल रही है। भाई कह रहा है भाई का सर्वनाश करके ही दम लूंगा नहीं तो मैं राजपूत का बच्चा ही नहीं। यह राजपूत एक दिन देश की ढाल था, देश का रक्षक था। आज वही राजपूत देशद्रोही बनकर म्लेच्छों की पदसेवा में लग गया है। सभा में बैठा मानसिंह

आंखें भरकर रोने लगा। पाठ समाप्ति के पश्चात् गोस्वामीजी के निकट आकर चरण पकड़कर मानसिंह बोलने लगा, 'मैंने भयंकर अपराध किया है। आज में पश्चात्ताप की अग्नि में जल रहा हूँ।' तुलसीदासजी ने कहा, 'चिन्ता नहीं। इस ग्लानि से बचने का अभी भी उपाय है।' मानसिंह ने पूछा, 'वह उपाय कौन सा है? मैंने सारा जीवन प्रताप का विरोध किया है। अब उसकी शरण में जाना मेरे लिए सम्भव नहीं है। इसके अलावा और कोई उपाय है तो बताएं?'

तुलसीदासजी ने कहा, 'अकबर की राजनीति से तुम अब अवकाश ग्रहण करो। उसके पश्चात् समस्त भारतवर्ष की तीर्थयात्रा करो ताकि तुम्हारा देशद्रोहिता, जातिद्रोहिता और भ्रातृद्रोहिता का पाप सदा के लिये धुल जाए। तुम अपनी अन्तिम समाधि हरिद्वार की हरकी पैड़ी में बनवाना ताकि सुरेश्वरी गंगा के पावन जल से अनन्तकालपर्यंत निरवधि (निरन्तर) तुम्हारे देशद्रोह, भ्रातृद्रोह एवं जातिद्रोह के पाप का परिक्षालन होता रहेगा।'

आप सब हरकी पैड़ी पर जाने से मानसिंह की छतरी देखेंगे। अनेक लोग भी कहते हैं—'इस विश्वासघाती की छतरी यहाँ क्यों? इसका कारण हुआ तुलसीदासजी की आज्ञा। मानसिंह के भ्रातृद्रोह के प्रायश्चित्त के लिए ताकि उसके पाप गंगा से धुलते रहें और भी एक कारण है, मानसिंह चाहते थे कि लोग उसे उसके अधम कार्य के लिये चिरकाल तक धिक्कार देते रहें। तुलसीदासजी ने यह चमत्कार करके दिखा दिया। जो यह संदेश देती है कि विचार और साहित्य की शक्ति एक राष्ट्र का इतिहास बदल सकती है। उन मुक्तिदाता तुलसीदासजी की जय।

रामचरितमानस विश्व के सबसे बड़े कंगाल का महानतम दान है जिसके बिना साहित्य रंक रहता और समाज अकिंचन्।

× × ×

जिन मुगल सम्राटों को इतिहास में महान् मुगल कहकर सम्बोधित किया जाता है उन्हें गुरु नानक, तुलसीदासजी, गुरु गोविन्दसिंह एवं संत कवियों ने चोर, लुटेरे, पापी और हत्यारे के रूप में चित्रित किया है। अतः हमें राग-द्वेष से मुक्त इन सन्तों की वाणी के आधार पर मध्यकालीन इतिहास का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिये।

**—प्रो. ओबराय**

# कविता करिके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला

कविकुल भाल कुंकुम श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास भारत, भारती एवं भारतीयता के प्राण हैं। संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में जिस प्रकार भगवान् वेदव्यास एक विशाल वटवृक्ष के समान सर्वत्र अपनी सुशीतल छाया फैलाए हुए दृष्टिगोचर होते हैं उसी प्रकार मध्यकालीन भारत के इतिहास से लेकर आज तक गोस्वामी तुलसीदासजी हिन्दी एवं हिन्दू समाज को अपने दिव्य साहित्यरूपी अश्वत्थ की सुविशाल एवं शक्तिदायिनी हरीतिमा के नीचे आश्रय दिए हुए हैं। भगवान् वेदव्यास के विषय में कहा जाता है व्यासोच्छिष्टं जगत्त्रयं अर्थात् तीनों जगत का जितना ज्ञान है वह भगवान् वेदव्यास की जूठन मात्र है। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य में सर्वोच्च प्रतिभा का दर्शन तो तुलसी में है, अन्यत्र तो उनकी जूठन मात्र ही दिखाई देती है। जैसे वेदव्यास आज से 5 हजार वर्ष पूर्व हमारे सांस्कृतिक उद्यान के कुशल माली बनकर आए तथा उन्होंने जाति के बिखरे हुए ज्ञान को एकत्र करके आगे आने वाली पीढ़ियों को दान दिया उसी प्रकार तुलसीदास ने अपने नानापुराण निगमागमसम्मत दिव्य रामचरितमानस में हिन्दू जाति का सारा सांस्कृतिक वैभव संचितकर तथा मध्यकालीन पराधीनता के भयंकर युग में उस सांस्कृतिक पूंजी को बचाकर, सजा-संवारकर भावी सन्तानों को दान कर दिया। हिन्दू जाति को जीवनदान देने वाले वे हमारे सच्चे प्राणदाता एवं मुक्तिदाता हैं।

भक्तमाल के प्रसिद्ध मालिकामणि श्री नाभादासजी की सूक्ति है—

**संसार अपार के पार को, युगम रूप नौका लिए।**
**कलि कुटिल जीव निस्तार हित, बाल्मीकि तुलसी भये।**

तुलसीदासजी के प्रिय मित्र, प्रसिद्ध मुसलमान कवि अब्दुल रहीम खानखाना भी अपनी तपःपूत लेखनी का अर्घ्य चढ़ाते हैं—

**रामचरित मानस विमल सन्तन जीवन प्राण।**
**हिंदुवान को वेद सम, यवनन प्रगट कुरान।।**

× × ×

**गूंजो फिर बन कर राम नाम, जन गण की वाणी में प्रकाम।**
**नवराष्ट्र जागरण के हेतु, तुलसी तुम गूंजो धाम धाम।।**

राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी अपनी वाणी का अर्घ्य चढ़ाते हुए गाते हैं—

**हे वाल्मीकि के पुनर्जन्म क्या नगर नगर क्या ग्राम ग्राम।**
**बज रही भक्ति की मधुर बीन क्या भवन भवन क्या धाम धाम**

× × ×

**क्या राज भवन क्या रंक द्वार सब ओर समाहत तुम समान।**
**क्या ज्ञानी गृह विज्ञानी गृह युग वाणी से तुम बने गान।।**

× × ×

**कितनी अनन्य थी परम भक्ति, जब देखा बंशी सजी हाथ।**
**बोले तो धनुष बाण कर में, तब तुलसी मस्तक झुके, नाथ।।**
**रीझे होंगे-खीझे होंगे, इस शिशु हठ पर वे प्रणत पाल।**
**घनश्याम मुग्ध हो बने राम, तब झुका तुम्हारा भक्त भाल।।**

× × ×

**शैवों, वैष्णवों में चला द्वन्द्व, तुम सद्वैष्णव आए उदार।**
**बिछुड़े हृदयों को मिला दिया; हो गए एक पा स्नेह तार।।**
**मिट गया कलह, छा गई शान्ति; तुमने दी वह ममता अपार।**
**भारत मां की बिखरी कलियां हो गईं एक पा स्नेह तार।।**
**श्री तुलसी सुचि सन्त समागम, अद्भुत अमल अनूप।**
**सूरदासजीवन फल पायो, दर्शन जुगल स्वरूप।।**

कविवर अयोध्यासिंह उपाध्याय ने गोस्वामीजी का जयगान कर स्वयं भावुकता का भी परम कल्याण कर दिया है—

**बन राम रसायण की रसिका**
**रसना रसिकों की हुई सफला**
**अवगाहन मानस में करके**
**जनमानस का मल सारा टला**
**बनी पावन भाव की भूमि भली,**
**आ भावुक भावुकता का भला**
**कविता कर के तुलसी न लसे**
**कविता लसी पा तुलसी की कला**

तुलसी की काव्य कला को पुष्पांजलि भेंट करते हुए श्री जगन्नाथदास रत्नाकर लिखते हैं—

**सब्दनि की बारी, चित्रसारि भूरि भावन की**
**सरबस सार सारदा की निपुनाई की।**

**दास तुलसी की नीकी कविता उदार, चारु**
**'जीवन आधार औ' सिंगार कविताई की।।**

प्रख्यात वीररस वर्षिणी कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी एक लम्बी काव्यमय कुसुमांजलि में गाती हैं—

**औ' करोड़ों कण्ठ से निकला, निनाद कि राम की जय।**
**सत्य की जय, शील की जय, औ' नयनाभिराम की जय**

**हिल उठे तब पाप के घर, ढह गए मिथ्या पुजारी।**
**बन गया सम्राट उर उर का, कि जो जन्मा था, भिखारी**

**पूर्व-पश्चिम क्या? दशों, दिशि शुभ्रतुलसी राज्य फैला**
**हिल सका अब तक न जो, ऐसा सुदृढ़ साम्राज्य फैला।।**

**आज भी कहते करोड़ों, कंठ हो कर भक्ति में लय**
**जयति जय, जय जयति जय, महाराज तुलसीदास की जय।**

**ओ जगत यदि चाहता यह, नाश तेरे त्रास का हो,**
**छोड़कर सब वासनाएं, दास तुलसीदास का हो**

**आज है संसार की आशा, लताएं शुष्क झुलसीं।**
**हे प्रभो फिर भेज दो तुम, एक हुलसी, एक तुलसी।।**

महात्मा गांधी के लिए तो तुलसी का मानस जीवन-मंत्र था। वे कहते हैं, 'तुलसीदास की रामायण मुझे अत्यन्त प्रिय है और उसे मैं अद्वितीय ग्रन्थ मानता हूँ। गीता और तुलसीदास की रामायण के संगीत से जो स्फूर्ति और उत्तेजना मुझे मिलती है वैसी और किसी से नहीं।'

भूदान के प्रणेता सन्त विनोबा महात्मा तुलसीदासजी के यश में कहते हैं—

'भारतीय साहित्य के इतिहास में तुलसीदास की रामायण का एक स्वतन्त्र स्थान है। हिन्दी राष्ट्रभाषा है और यह उस भाषा का सर्वोत्तम ग्रन्थ है। अतः राष्ट्रीय दृष्टि से इस ग्रन्थ का स्थान अद्वितीय है ही, पर भारत के करोड़ों लोग इसे वेदतुल्य प्रामाणिक मानते हैं। यह नित्य परिचित तथा धर्म-जागृति का एकमात्र आधार है, अतः धर्म दृष्टि से भी इसे अद्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है।'

डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन ने लिखा है कि 'आधुनिक काल में तुलसीदास के समान दूसरा ग्रन्थकार नहीं हुआ है।'

रेवरेण्ड एडविन ग्रीब्स (मेलर्बन, इंग्लैण्ड) ने लिखा है—

'वह हमारे केवल प्रशंसा के पात्र नहीं, प्रेम के भी हैं और वह प्रेम उन्हें प्राप्त भी हुआ है, इस का ज्वलन्त उदाहरण यही है कि समस्त हिन्दी साहित्य में ऐसी कोई भी पुस्तक नहीं जिसका राजप्रासाद से लेकर एक निर्धन की कुटिया तक इतना अधिक प्रसार हो।'

डॉ. जे. एम. मैकफी ने अपने ग्रन्थ 'द रामायण ऑफ तुलसीदास आर द बाइबिल ऑफ नॉर्दर्न इंडिया' की भूमिका में लिखा है—

'गोस्वामी तुलसीदासजी के ग्रन्थों में भक्ति का जो उच्च और विशुद्ध भाव नजर आता है उससे बढ़कर उच्च भाव और कहीं नहीं दिखलाई देता।' डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र की काव्य-प्रतिभा तुलसीदास के स्तवन में नृत्य करने लगती है—

**उपमा में कालिदास, दण्डी पद सौष्ठव में,**
**भारवि का श्रेष्ठ अर्थ गौरव में नाम है,**
**किन्तु तुलसी की प्रतिभा का तीर्थराज पाके**
**तीनों की त्रिवेणी हुई पावन ललाम है।**
**यों तो काव्य गगन में सूर भी हैं चन्द भी हैं,**
**भावना कबीर आदि की भी अभिराम है,**
**तुलसी को देख के ही पर हम जान पाये,**
**कवि क्यों कहाया पर मेरा विश्व धाम है।**

मध्यकालीन भारत की ज्ञान-गंगा के भागीरथ, सच्चे आध्यात्मिक अर्थ में 'कवि' के सुनाम को धन्य करने वाले, भारत एवं भारती के भाग्यविधाता श्रीमद्‌गोस्वामी तुलसीदासजी को हमारे वन्दना-व्याकुल हृदयों की कृतज्ञ पुलकांजलि सादर समर्पित हो।

**22 अगस्त 1961**
**दैनिक 'वीर प्रताप' में प्रकाशित**

# कविकुल भाल कुंकुम गोस्वामी तुलसीदास की कमनीय कीर्ति

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में कोटिशः वन्दित जनगण-पूजित श्री गोस्वामी तुलसीदासजी का पावन नाम एक जादू का नाम है। उन पुण्यश्लोक सन्त शिरोमणि ने हमें जो कुछ दिया, उतना पिछली चार शताब्दियों में अन्य कौन दे सका है? संस्कृति की फुलवाड़ी के समस्त प्रफुल्ल पुष्पों का रस संचय करके जो अनूठा मधु हिन्दू जाति को दान दिया वह विश्व इतिहास का अद्वितीय दान ही है, उस मानस मधु का पान कर दुःख, दास्य, दैन्य, दौर्बल्य से जकड़ी हुई मरणासन्न हिन्दू जाति सभी शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से मुक्त होकर मृत्युंजय बन गई।

मध्यकालीन भारत के महान् आचार्य एवं गीता की मधुसूदन टीका के प्रख्यात रचयिता श्रीपाद मधुसूदन सरस्वतीजी गोस्वामी तुलसीदासजी के दर्शन कर उनकी प्रशस्ति में गा उठे—

**आनन्द काननें ह्यस्मिन जंगमस्तुलसी तरुः।**
**कविता मंजरी यस्य राम भ्रमर भूषिता।।**

अर्थात्, आनन्दकानन में कोई तुलसी नाम के चलते-फिरते वृक्ष (गोस्वामी तुलसीदासजी) हैं, जिनकी कविता रूपी मंजरी पर सदा रामरूपी भौंरे गूंजते रहते हैं।

अष्टछाप के प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवि श्री नन्ददासजी, जो गोस्वामीजी के चचेरे भाई भी थे तथा शेष सनातन धर्म के पास एक साथ पढ़ने वाले होने के कारण उनके सहपाठी, गुरु-भाई भी थे, गोस्वामीजी के प्रति कृतज्ञता के फूल चढ़ाते हुए कहते हैं—

**श्रीमद्तुलसीदास स्वगुरु भ्राता पद वन्दे।**
**सेष सनातन विपुल ज्ञान जिन पाई अनन्दे।।**

**रामचरित जिन कीन्ह ताप त्रय कलिमल हारी।**
**करि पोथी पर सही आदरेउ आप पुरारी।।**

**राखी जिन की टेक मदनमोहन धनुधारी।**
**वाल्मीकि अवतार कहत जेहि सन्त प्रचारी।।**

**नन्ददास के हृदय नयन को खोलेउ सोई।**
**उज्ज्वल रस टपकाय दियो जानत सब कोई।।**

भक्तशिरोमणि सूरदास तथा संतप्रवर तुलसीदास का मिलन तो मध्यकालीन इतिहास की मधुरतम घटना है। ब्रजभूमि में पधारने पर गोस्वामीजी का कृष्णलीला गायन में तल्लीन महाकवि सूरदास से साक्षात् हुआ। यह ब्रज तथा अवधी के मिलन, किंवा साक्षात् राम और कृष्ण के मिलन के तुल्य था। दोनों महान् विभूतियों ने परस्पर आलिंगनकर एक-दूसरे को आंसुओं की गंगा-यमुना में नहला दिया। उस अवसर पर महाकवि सूरदासजी ने गोस्वामीजी के अभिनन्दन में जो कुछ गाया वह सचमुच एक महान् की महान् को श्रद्धांजलि है——

**धन्य भाग मम सन्त सिरोमणि चरण कमल तकि आयऊं।**
**बदन प्रसाद-सदन दृग भरि लखि सुख सन्दोह समायऊं।।**

**दया दृष्टि ते मम दिसि हेरेउ तत्त्व स्वरूप लखायो।**
**कर्म उपासन ज्ञान जनित भ्रम-संसय मूल नसायो।।**

**हरि लीला गायो तेहि सुनि तनु पुलकित मानस धीर।**
**सुधा समान वचन कहि पोवेउ, सुमिरत सिय रघुबीर।।**

**श्री तुलसी सुचि-सन्त समागम अद्भुत अमल अनूप।**
**सूरदासजीवन फल पायो दरसन जुगल स्वरूप।।**

गोस्वामी तुलसीदासजी का ही समकालीन श्रीकृष्णचन्द्र चन्द्रिका का तृषित चकोर महाकवि रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक था। वह गोस्वामीजी का महान् मित्र एवं प्रशंसक था। जब गोस्वामी तुलसीदासजी के पास एक निर्धन ब्राह्मण अपनी कन्या के विवाहार्थ आर्थिक सहायता की कामना से आया तो गोस्वामीजी ने उसे रहीम के पास भेज दिया तथा एक पंक्ति लिख दी——

**सुरतिय नरतिय नागतिय यहि मांगत सब कोय।।**

अर्थात्, सभी जाति की स्त्रियाँ यही चाहती हैं कि कन्या किसी अच्छे वर-घर को प्राप्त होवे।

कविवर रहीम ने उस विप्र को धन तो दिया ही, दोहा पूरा करके तुलसीदास के पास वापस भेजा——

**सुरतिय नरतिय नागतिय यहि मांगत सब कोय।**
**गोद लिये हुलसी फिरें, तुलसी सो सुत होय।।**

अर्थात्, सभी जाति की स्त्रियाँ यही चाहती है कि उनके घर में तुलसी जैसा महान् पुत्र होवे तथा वे तुलसी के समान हुलसित होकर उस पुत्ररत्न को गोद में लिये फिरें।

भक्ति रस के छलकते हुए समुद्र महाकवि रसखान की रसभरी भावांजलि कितनी मधुर है—

**सुरतरु लतान चारि फल है फलित किधौं,**
**काम धेनु धारा सम नेह उपजावनी।**
**किधौं चिन्तामननि की माल उर सोभित,**
**विसाल कंठ में धरे हैं ज्योति झलकावनी।**
**प्रभु की कहानी ते गोसाईं की मधुर बानी,**
**मुक्त सुखदानी 'रसखानि' मनभावनी**
**खांडकी खिजावनी-सी कंदकी कुढ़ावनी-सी,**
**सिताको सतावनी-सी, सुधा सकुचावनी।**

रामचरितमानस के दर्शन कर महाकवि तोष के हृदय का तोष कितने सुन्दर भाव-पुष्पों में प्रकट हुआ है—

**यह खानि चतुष्फल की सुखदानि, अनूपम आनि हिये हुलसी।**
**पुनि सन्तन के मन भृंगन को, अति मंजुल नाल लसी तुलसी।**
**अस मानुष के तरिबे कहूँ, 'तोष' भई भव सागर के पुलसी।**
**सब कामन-दायक काम दुहा, सम राम कथा बरनी तुलसी।**

प्रसिद्ध पाश्चात्य इतिहासकार विंसेन्ट स्मिथ लिखते हैं—

'फारसी के अधिकांश कवियों की तुच्छता एवं अपवित्रता से मुंह मोड़कर उस हिन्दू की तेजस्वी पवित्र कृति की ओर ध्यान देने से हृदय को बड़ा सुख होता है—वह महान् कवि मध्यकालीन हिन्दू काव्य के चमत्कृत कानन का ऊर्ध्वतम गगनचुम्बी दिव्य तरु है। उसका नाम 'आइने-अकबरी' में या किसी मुस्लिम इतिहासकार के पृष्ठों में या फारसी इतिहासकारों के आधार पर लिखी हुई यूरोपीय लेखकों की पुस्तकों में नही मिलेगा। फिर भी वह हिन्दू, भारत में उस युग का महानतम महामानव था—अकबर से भी अधिक महान् क्योंकि उस महाकवि द्वारा कोटि-कोटि लोगों के हृदयों तथा मनों को विजित करने का कार्य एक ऐसी विजय है जो एक सम्राट् द्वारा युद्ध में प्राप्त की हुई समस्त विजयों से भी अनन्त गुणा अधिक महान् है।

जार्ज ग्रियर्सन लिखते हैं—'यदि हम तुलसीदास के आधुनिक काल पर प्रभाव को मापदण्ड मानकर चलें तो भी वे एशिया के तीन या चार महानतम लेखकों में से एक ठहरते हैं....समूची गंगा की वादी में तुलसी की रामायण का इंग्लैण्ड में बाइबिल की अपेक्षा भी अधिक प्रचार है।'

आधुनिक काल में एक संस्कृत कवि श्री दशरथ शास्त्री ने संस्कृत के पद्य-पुष्पों से तुलसीदासजी की नीराजना की है—

**श्रुति स्मृति पुराणाक्ष; कलौ देवगिरां हरः।**
**जनता सुख-बोधाय तुलसी गिरिजापतिः।।**

**सूक्तिपादादको तुंगतरंगैः क्षालितांतरः।**
**कलिजानां नृणामासीतुलसी तुलसीप्रियः।**

**सम्भवत्या बुद्धवोयोगे दत्तो ज्ञाने शुकोऽभवत्।।**
**विधौ कात्यायनः कान्तौ ग्लौरन्यः तुलसी लसी।।**

महाकवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' तो कहते हैं कि तुलसीदास की पावन कला का वरदान पाकर कविता भी धन्य-धन्य हो उठी—

**बन राम रसायन की रसिका।**
**रसना रसिकों की हुई सफला।**
**अवगाहन मानस में करके,**
**जनमानस कमल सारा टला।**
**बनी पावन भाव की भूमि भली**
**हुआ भावुक भावुकता का भला**
**कविता करके तुलसी न लसे**
**कविता लसी पा तुलसी की कला।**

'साकेत' महाकाव्य के अमर रचयिता राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी ने गोस्वामीजी की वन्दना में गाया है—

**प्रस्फुटित करके हमारा पुण्य पूर्णादर्श,**
**हृदय को तुमने दिया है अमृत हस्त स्पर्श**
**राम राजा ही नहीं पूर्णावतार पवित्र,**
**पर न हमसे भिन्न है, साकेत का गृह चित्र।**
**प्रकृति पट पर अन्तर्जगत का दृश्य,**
**धन्य वह संगीतमय सत्काव्य हृदय स्पृश्य।**
**धन्य भारतवर्ष की प्रतिमा प्रकाश विलास,**
**धन्य राम चरित्र मानस धन्य तुलसीदास।।**

कविवर सोहनलाल द्विवेदी ने तुलसी को अपनी अर्चना के पुष्प चढ़ाए हैं—

**जब मुगल महीपों के बादल छाए,**
**भारत नभ में अपार,**

**दासता पराजय गृह विग्रह से**
**गहराया तम का प्रसार।**
**तब राम नाम का अमृत ले,**
**आए गौरव गाते अमन्द्र,**
**मृतहत जनता को मिले प्राण,**
**चमके तुम बन सौभाग्य चन्द्र।।**
**गूंजो फिर बनकर राम नाम**
**जनगण की वाणी में प्रकाम।**
**नव राष्ट्र जागरण के हेतु,**
**तुलसी तुम गूंजो धाम-धाम।।**

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' अपने 'तुलसीदास' नामक प्रबन्धकाव्य में गीत के माध्यम से मानो नाच उठते हैं—

**जागो, जागो आया प्रभात,**
**बीती वह बीती अन्ध रात,**
**झरता भर ज्योतिर्मय प्रपात, पूर्वांचल,**
**बांधो बांधो किरणें चेतन,**
**तेजस्वी हे तमज्जिजीवन,**
**आत भारत की ज्योतिर्धन माहिमाबल।**
**काल के शर से विंधकर,**
**यह जागा कवि अशेष-छविधर**
**इसका स्वर भर भारती मुखर होएंगी,**
**निश्चेतन निज तन मिला विकल**
**छलका शत शत कल्मष के छल**
**बहती जो वे रागिनी सकल सोएंगी।।**

श्री विवुधेश्वर प्रसाद उपाध्याय ने तुलसी जन्म का चित्रण किया है—

**जाग उठी धरती मां धीरे से चीख पड़ी,**
**मानो थी वह पीड़ित प्रसव की पीड़ा से।**
**देवों की वाणी शुभ-कौन हुआ, किसने अवतार लिया?**
**बोला नभ तुलसी ने....(अपूर्ण)**

**31 जुलाई 1960**
**दैनिक 'वीर प्रताप' जालन्धर में प्रकाशित**

# गोस्वामी तुलसीदास

हम जिन महापुरुष की जयन्ती आज मना रहे हैं उनका परिचय आप सबको है—गोस्वामी तुलसीदास जी। उनकी महिमा में एक-दो श्लोक सुनाता हूं जिसका भाव यह है—भक्ति में साक्षात् उद्धव के समान हैं। भक्ति की पराकाष्ठा है, उद्धव में। जो भगवान् कृष्णचन्द्र का इतना परम भक्त हुआ कि व्रज की भूमि में गोपों एवं गोपाङ्गनाओं के चरण से स्पर्श की हुई भूमि के कण-कण पर लोट-लोट कर उस धूलि को मस्तक पर चढ़ाता है। ऐसा परम भक्त। गोस्वामी तुलसीदासजी भक्ति में उद्धव जैसे हैं। योग में साक्षात् दत्तात्रेय हैं। ज्ञान में साक्षात् शुकदेव हैं। दत्तात्रेय कौन हैं? भगवान श्रीरामचन्द्र (राघवेन्द्र, मर्यादा पुरुषोत्तम) वनवास का प्रथम पड़ाव चित्रकूट रख चुके थे। चित्रकूट एक विचित्र कूट है। कूट का अर्थ पर्वत है। और चित्र के समान है, वह विचित्र है। हजारों वर्षों तक वह उत्तरापथ-दक्षिणापथ की सीमा रहा है। चित्रकूट में भगवान् ने प्रथम पड़ाव किया। वहीं से वनवास शुरू हुआ। उसके ऊपर का सारा क्षेत्र अवध राज्य में आता था। अवध के राज्य के बाहर का स्थान है चित्रकूट। उस चित्रकूट में एक स्थान आज भी प्रसिद्ध है, अनुसूयाजी। वहां पर अत्रि मुनि का स्थान है। अत्रि मुनि कौन? जिन्होंने तीन को एक रूप में देखा। जिनको तीनों मिलकर एक दीखते हैं—ब्रह्मा, विष्णु, महेश। जिनके लिए तीन नहीं बचे। तीनों मिलकर एक हो गए। उनकी बड़ी ही पतिपरायणा धर्मपत्नी। वह देवी है अनुसूया। जिसने जीवन में किसी से सूया नहीं किया। जिसने किसी से जलन नहीं रखी। ऐसी स्त्री जिसने सीता को भी पातिव्रत धर्म का उपदेश दिया। उस अनुसूया के घर में तीनों देव ब्रह्मा, विष्णु, महेश उसके पातिव्रत धर्म की परीक्षा लेने के लिए आते हैं। उन्होंने तीनों को बालक रूप बनाकर घर में डाल दिया और तीनों देव बच्चे बनकर बैठे हैं माता अनुसूया के सामने। उन तीनों के अंश से उनके एक पुत्र हुआ जिनका नाम हुआ दत्त। दत्त तीनों की कृपा से मिला हुआ होने के कारण दत्त। दत्त माने दिया हुआ। और अत्रि का पुत्र होने से दत्तात्रेय। अत्रि के पुत्र दत्तात्रेय जिसमें तीनों समन्वित हो गए। तीनों को शिशु रूप करके अनुसूया ने बच्चा बना लिया। तीनों की शक्तियां उमा, लक्ष्मी और ब्रह्माणी आ करके गिड़गिड़ाने लगी अनुसूया के

पास कि हमारे तीनों देवताओं को आपने अपने यहां बंदी बना लिया है। हमारे देवता कहां गए? तीनों को बच्चा बना लिया। इन तीनों की मुक्ति का उपाय? ये तीनों मेरे बच्चे बने और मैंने तीनों को अपना बच्चा बना लिया। भगवान् को जिसने बच्चा बना लिया ऐसी देवी है अनुसूया। उसके पुत्र दत्तात्रेय योग के महान् आचार्य। गोस्वामी तुलसीदासजी भक्ति में साक्षात् उद्धव के समान, योग में दत्तात्रेय के समान, ज्ञान में साक्षात् शुकदेव के समान। शुकदेव कौन? भगवान् वेदव्यास के बाल ब्रह्मज्ञानी पुत्र। यह उक्ति, 'व्यासोच्छिष्ट जगत् त्रयम्', तीनों जगत् का जितना ज्ञान है वह तो वेदव्यासजी की जूठन मात्र है। क्यों? हमारे पास क्या है जी! वैदिक वाङ्मय। वेद तो दीखने में भिन्न-भिन्न शाखाओं में फैले हुए थे। पितृ कुल चलता है, पिता की संतानों से और गुरुकुल चलता है, गुरुओं के शिष्यों से। शिष्य ही गुरु की संतान। इसलिए परमहंस रामकृष्णदेव विवेकानन्द को बेटा-बेटा कहते हैं। हर गुरु शिष्य को बेटा मानता है। क्योंकि पिता पुत्र को वीर्य का बीज देता है और गुरु ने तो अपना ज्ञान लुटा दिया है। सारा ज्ञान दे देता है। ज्ञान का बीज नहीं ज्ञान ही दे देता है। रामकृष्ण परमहंसदेव ने शक्तिपात के द्वारा विवेकानन्द को सारा ज्ञान दे दिया। हे नरेन्द्र! तू अब ज्ञानवान, धनवान हो गया। अब मैं गरीब, भिखारी हो गया क्योंकि मैंने अपना सब कुछ तुझे दे दिया है। नरेन्द्र कहते हैं मेरे भीतर अद्‌भुत प्रकाश आ गया। हे भगवान्! मैं संसार में किसी से पराजित नहीं होऊं। कोई भूमण्डल में मुझे पराजित करने वाला न हो सिवाय अपने पुत्र से या शिष्य से। पुत्र से पराजित होने का अर्थ है, सोचूंगा अगली पीढ़ी अधिक योग्य बनेगी। शिष्य से पराजित होने का अर्थ विद्या का प्रकाश हो रहा है। अगली पीढ़ी अधिक ज्ञानवान बन रही है। इस प्रकार जाति प्रगति करे पर आज शिष्य कहते हैं—मुझे तो चार प्रश्न बता दीजिये। जो शिष्य गुरु का सौवां हिस्सा भी ग्रहण न करे, प्रशिष्य शिष्य के ज्ञान का सौवां हिस्सा भी ग्रहण न करे तो वह जाति कितने वेग से पतन के गर्त की ओर जा रही है। इसलिए गुरु शिष्य से पराजित होने में गौरव मानता है। जिसको हमने पढ़ाया है, मुझसे योग्य हो गया। यह मेरा गौरव है। इसलिए गुरु का गुरुकुल उसके शिष्यों से चलता है। पितृ कुल उसके पुत्रों से चलता है। गुरुकुलों में जो-जो शिष्य गुरुकुल में आते थे वहां पर उनको वेदमंत्र पढ़ाते थे। वेदमंत्रों की शिक्षा भिन्न-भिन्न शाखाओं में चल रही थी। वेद की अनेक शाखाएँ हैं। वेदव्यासजी ने देखा आगे घोर कलिकाल आ रहा है। तब तक वेद श्रुति था। भारत के बच्चे श्रुति का अर्थ सुनकर एक लाख मंत्रों को खोपड़ी में समा लेने वाले होते थे इसलिए हजारों वर्षों तक वेद श्रुति रहा। सुनकर प्राप्त किया हुआ ज्ञान वेद। उसने अगली पीढ़ी को सुनाया। फिर उसने अगली पीढ़ी को सुनाया। इस तरह से वेद ज्ञान, बिना लिखित रूप से चलता रहा। वेदव्यासजी ने देखा आगे घोर कलिकाल आ रहा है। कलिकाल में लोगों

की बुद्धि छोटी हो जाएगी। उनकी मेधा शक्ति भी कम हो जाएगी। उनकी धारणा शक्ति भी कम हो जाएगी। उनकी स्मृति शक्ति भी कुण्ठित हो जाएगी। अब इतने ज्ञान को एक खोपड़ी में समाने की शक्ति कुण्ठित हो जाएगी इसलिए इसका सम्पादन करो, नहीं तो वेद ज्ञान नष्ट हो जाएगा। इसलिए भिन्न-भिन्न शाखाओं में फैले हुए वेद ज्ञान को एकत्र करके सम्पादित किया। जो उनमें से ऋचायें थी अर्थात् काव्यमय स्तुतियां थी, उनको सम्पादन कर नाम दिया ऋग्वेद। वह सबसे बड़ा वेद तथा जो उसमें यजुस गद्य में और यज्ञ से सम्बन्धित मंत्र थे उनको नाम दिया यजुर्वेद। जो उसमें से गीत थे, गीत को संस्कृत में कहते हैं साम। साम यानी गीत। यही साम शब्द यूरोप की सभी भाषाओं में सांग हो गया। संस्कृत का साम शब्द ही यूरोप की सब भाषाओं में चला गया। जितने भी गाने योग्य मंत्र थे, गीत थे उनको सामवेद के नाम से सम्पादित किया और अन्य जो विषय रह गए उनका अथर्वा ऋषि ने बहुत कुछ सम्पादन किया था। उसमें पृथ्वी के, राष्ट्रीयता के, संगठन के, आयुर्वेद के, धनुर्वेद के यानी अनेक विषय बच गए उनको अथर्ववेद नाम देकर सम्पादन किया।

चार वेदों के रूप में वैदिक ज्ञान का सम्पादन करके उसको हमारे राष्ट्र को देने वाले वेदव्यासजी थे। वेदों का सम्पादन करके हमें दिया। इसलिए वेदों का व्यास करने के कारण उस कृष्णद्वैपायन को वेदव्यास की उपाधि मिली। फिर उन्होंने महान् ग्रंथ लिखा महाभारत। वह ग्रंथराज जो भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा विश्वकोश है, जो भारत में है वह सब कुछ महाभारत में मिलेगा। इसलिए भारतीय संस्कृति का कोई विषय छोड़ा ही नहीं उन्होंने। उसमें तो ऐसे महान् ग्रंथ, जिसको तराजू के एक पलड़े में रखें तो उसकी तुलना में इलियड, ओडीसी की 6-6 जिल्दें रखें तो भी हमारा महाभारत ओडीसी के छह गुणा भार से भी ज्यादा भारी है। इतना बड़ा महाकाव्य दुनिया में किसी के पास है नहीं। उस महाभारत के भीतर जो केन्द्र में भीष्म पर्व है, मानो 18 पंखुड़ियों वाला एक विशाल कमल है। उस अष्टादशदल कमल के मध्य में, केन्द्र में, नवें पर्व में, भीष्म पर्व में, कमल के बीचोबीच में एक मधुकोश होता है, जहां उसमें उसका सबसे सुगंधित मधु प्रतिष्ठित रहता है, सबसे अधिक सुगंधि जहां रहती है, मधु रहता है। इस तरह महाभारत की 18 पंखुड़ी वाले महान् कमल के केन्द्र में, बीचोबीच, भगवद्‌गीता रूपी अमृत को उन्होंने प्रतिष्ठित कर दिया।

यह वेद व्यासजी की देन है। अध्यात्म रामायण उनकी देन है। रामायण तो महर्षि वाल्मीकि ने लिखी। अध्यात्म रामायण वेदव्यासजी ने लिखी। वेदान्त दर्शन से ऊंचा कोई दर्शन ही नहीं है जिसकी किरणों से विवेकानन्द, रामतीर्थ चमकते हैं दुनिया में। शंकराचार्य चमकते हैं। यह वेदान्त दर्शन है। दुनिया में अद्‌भुत है। यह

वेदान्त दर्शन वेदव्यासजी की देन है। भक्ति का सबसे महान् ग्रंथ श्रीमद्भागवत महापुराण, 18 पुराण किसने लिखे? वेदव्यासजी ने। व्यास स्मृति उनकी देन है। क्या-क्या उन्होंने नहीं लिखा? क्या नहीं उन्होंने दिया है? जितना उन्होंने दिया वह अतुलनीय है। जो कुछ देना था उन्होंने दे दिया। बाकी लोगों ने तो उनकी जूठन का प्रसाद बांटा है। इसलिए कहा, 'व्यासोच्छिष्ट जगत् त्रयम्।' तीनों जगत् का जितना ज्ञान है, वेदव्यासजी की जूठन मात्र है। इसलिए वेदव्यासजी को राष्ट्रगुरु के रूप में व्यास पूर्णिमा पर हम पूजते हैं। वेदव्यासजी के ब्रह्मज्ञानी पुत्र हुए शुकदेव जी। माता से नाल ही कटवाए बिना भाग लिये। वेदव्यासजी पीछे-पीछे दौड़े—बेटा-बेटा। शुकदेव कहते हैं, कि हजारों बार पिता हुआ तो, हजारों बार पुत्र हुआ। ये सम्बन्ध क्या गिनाते हैं? मैं तो शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, अजर-अमर आत्मा हूं। वह भागते हुए जा रहा है। वेदव्यास पुकार रहे हैं, पुत्र-पुत्र। वृक्ष भी प्रतिध्वनि कर रहे हैं, पुत्र-पुत्र। पर ब्रह्मज्ञानी बेटा अविचलित है। सामने सरोवर में रमणियां नहा रही थी। शुकदेव नंग धड़ंग भागे जा रहे हैं। रमणियों ने अपने शरीर को ढकने की भी चेष्टा नहीं की। वेदव्यास को देखकर रमणियों ने अपना शरीर ढक लिया। वेदव्यासजी ने देखा मेरा जवान लड़का गया तो शरीर ढका नहीं और मुझ बूढ़े आदमी को देखकर लज्जित हो गईं। क्या बात है? उन्होंने पूछा तो रमणियों ने कहा उसे संसार की हवा ही नहीं लगी। वह तो केवल ब्रह्म में स्थित है। उसे तो स्त्री-पुरुष के भेद का पता ही नहीं है। यह सुनकर वेदव्यासजी ने धरती पर लेट कर शुकदेवजी को प्रणाम किया। मैं तुझे क्या पुत्र कहूं, तुझे क्या शिक्षा दूं? तू तो मेरा भी गुरु है। शुकदेव ज्ञान की पराकाष्ठा हैं। इसलिए कहा—

**सम्भक्त्या उद्धवो योगे दत्तो।**
**ज्ञाने शुकोऽभवत्।।**

भक्ति में उद्धव, योग में दत्तात्रेय एवं ज्ञान में शुकदेव हैं।

विधि से, न्याय से, धर्म के विधान से दूसरे कात्यायन थे। कात्यायन ऋषि ने क्या चमत्कार किया? मनु स्मृति मनु ने, पराशर स्मृति पराशर ने लिखी। सभी स्मृतियां महान् हैं, लेकिन कात्यायन ऋषि ने मर्यादा पर जो बल दिया है, वह अतुलनीय है, बेजोड़ है। तो मर्यादा का पालन करने में, निर्वाह करने में तुलसीदासजी विश्व के सभी कवियों में शिरोमणि हैं। इनसे बढ़कर मर्यादा का पालन करने वाले स्वयं राघवेन्द्र (मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी) हैं। मर्यादा के विश्वकवि तुलसीदास, मर्यादा पालन में साक्षात् कात्यायन ऋषि के समान हैं। 'विधौ कात्यायन' कान्ति में, प्रकाश में चन्द्रमा के समान है। चलते-फिरते सरोवर के समान, विश्व मंगल के लिए चन्द्रिका के समान प्रकाश लुटाता है। चन्द्रिका, जो अपनी चांदनी, अपना अमृत लुटाता है विश्व मंगल के लिए। विश्व मंगल के

लिए अपनी चन्द्रिका लुटाता है। चन्द्रमा के समान ऐसे तुलसीदासजी के चरणों में हम कोटिशः वंदना करते हैं। प्रणाम करते हैं।

इनके समकालीन महान् संतकवि हुए भक्त शिरोमणि सूरदास जी। सूरदासजी कृष्ण भक्ति के महाकवि, तुलसीदासजी राम भक्ति के महाकवि। तुलसीदासजी एक बार ब्रज मण्डल में गए और सूरदासजी से मिले। सारे ब्रज मण्डल में भगवान् कृष्ण के ही मन्दिर हैं। एक मन्दिर रघुनाथजी का है। यह मन्दिर इन्हीं की कृपा से बना। इन्होंने कहा—

**क्या कहूँ छवि आप की, भले बने हो नाथ।**
**तुलसी मस्तक तब नवे, जब धनुष बाण ल्यो हाथ।।**

प्रभु का एक ही रूप अनेक रूपों में विराजता है। मैं तो राम का भक्त हूं। मेरे इष्ट तो राम हैं इसलिए आप धनुष बाण हाथ में ले लो तो मेरा मस्तक तुरन्त आपके चरणों में झुक जाए। उस समय राष्ट्र को आवश्यकता बंशी की नहीं, राष्ट्र को आवश्यकता थी धनुष बाण की। धनुर्धारी राम, असुरनिकन्दन राम और दुष्ट दलन करने वाले महान् बजरंग बली, गदाधारी की आवश्यकता थी। अतः भगवान् को भी युग की आवश्यकता के अनुसार प्रकट होना पड़ेगा।

प्रायः लोग इस दोहे से यह भाव लेते हैं कि तुलसीदासजी राम के ही अनन्य भक्त थे। वे कृष्ण के सामने मस्तक नहीं झुका सकते थे। तुलसीदासजी ने कहा कि जब आप धनुष बाण हाथ में लेंगे (श्रीराम का रूप धारण करेंगे) तभी मेरा मस्तक झुकेगा।

दोहे का यह अर्थ लगाना उचित नहीं। तुलसीदासजी सब देवी-देवताओं के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव रखते थे। वे ऐसे संकीर्ण विचारों के नहीं थे कि अपने आराध्य देव के अतिरिक्त किसी अन्य देव के सामने नतमस्तक न हों। वे बड़े आदर देने वाले और समन्वयवादी थे।

प्रमाण स्वरूप श्रीरामचरितमानस के कुछ आरम्भिक पृष्ठ पढ़ें तो पता चलता है कि उन्होंने ग्रंथ के आरम्भ में श्रीगणेश, श्रीशंकर-पार्वती, हनुमान जी, अपने गुरुदेव, ब्राह्मण समाज तथा सब संतों की वंदना की है।

तुलसीदासजी जानते थे कि श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनों विष्णु भगवान् के ही अवतार थे। वे दोनों के प्रति पूज्य भाव रखते थे। इसलिए जहां उन्होंने श्रीराम का यश वर्णन करने के लिए श्रीरामचरितमानस लिखा वहीं श्रीकृष्ण का यश वर्णन करने तथा उनकी वंदना करने के लिए कृष्ण गीतावली जैसा ग्रंथ भी लिखा। इसलिए यह सोचना कि तुलसीदासजी का मस्तक केवल श्रीराम के सामने ही झुक सकता था, श्रीकृष्ण के सामने नहीं, उनके प्रति अन्याय होगा।

श्रीकृष्ण ने जीवनभर बांसुरी ही नहीं बजाई। किशोरावस्था तक मुरली बजाई और माखन चुराया। उसके बाद उन्होंने शस्त्र धारण करके उस समय के अनेक अत्याचारी, लोकपीड़क राजाओं से युद्ध किया और जनता को उनके आतंक से मुक्ति दिलाई। उन्होंने सुदर्शन चक्र, धनुष बाण तथा खड्ग धारण किया था। यह श्रीकृष्ण का लोकरक्षक और धर्मरक्षक रूप था।

यह आश्चर्य की बात है कि अधिकांश कृष्णभक्त कवियों ने श्रीकृष्ण के मधुर रूप अर्थात् मुरली बजाने वाले, रास रचाने वाले रूप का ही विस्तार से वर्णन किया और उनके लोक-रक्षक, धर्मरक्षक, दुष्टविनाशक योद्धा रूप की उपेक्षा की। कवियों का यह कार्य युग की आवश्यकता के अनुरूप नहीं था। उस समय समाज पर अत्याचार हो रहे थे। धर्म संकट में था। ऐसे समय धनुर्धर रूप का लोकरक्षक रूप सामने रखने की आवश्यकता थी। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गोस्वामीजी ने राम का लोकरक्षक रूप रामचरितमानस में प्रस्तुत किया।

अतः दोहे का वास्तविक भाव यह है कि श्रीकृष्ण! मुरली बजाते हुए आप बड़े सुन्दर लगते हैं। परन्तु आज धनुष बाण धारण करने की आवश्यकता है। मेरा मस्तक तभी झुकेगा जब आप धनुष बाण हाथ में लेंगे, जैसा कि आप पहले कर चुके हैं।

उसके बाद सूरदासजी से मिलने गए और सूर-तुलसी का जो मिलन हुआ बड़ा अलौकिक मिलन हुआ। दोनों संतों ने एक-दूसरे को आलिंगन में बांधकर प्रेम से भिगो दिया। यह मिलन मानो राम भक्ति शाखा-कृष्ण भक्ति शाखा का मिलन, तो साक्षात् गंगा-यमुना का मिलन, मानो ब्रज भाषा-अवधी भाषा का मिलन, मानो राम और कृष्ण का ही मिलन था। उस अवसर पर महाकवि सूरदासजी ने गोस्वामी के अभिनन्दन में जो कुछ गाया वह सचमुच एक महान् की महान् के प्रति श्रद्धांजलि है—

**धन्य भाग मम सन्त सिरोमणि**
**तव दर्शन तटि आयो।**
**बदन प्रसाद-सदन दृगभरि लखि**
**सुख सन्दोह समायो।।**
**धन्य भाग सन्त सिरोमणि....**

हे सन्त शिरोमणि तुलसीदास जी! मेरे धन्य भाग्य हैं। तव दर्शन तटि आयो। दर्शन देने के लिए आप आए। आप कह सकते हैं, सूरदासजी ने दर्शन कैसे किये? सूरदासजी कहते हैं 'बदन प्रसाद सदन' आपका शांति से भरा हुआ मुखारविंद मैंने आंखें भरकर देख लिया 'दृगभरि लखि'। जन्मान्ध सूरदासजी ने आंखें भरकर

देख लिया। यही चमत्कार है। जो अन्तर से साक्षात् भगवान् को देखते हैं उनके लिए संतों को देखना कौन कठिन कार्य है? क्या उन्होंने निश्चय ही तुलसीदासजी को आंखें भरकर देख लिया। आदमी देखता कैसे है? मेरे शिष्य ने कहा मैंने 26 जनवरी की रांची में हुई परेड को देखा। कैसे देखा? तुम तो यहां पुरुलिया में मेरे साथ हो। मैंने स्वप्न में हूबहू परेड देखी। सचमुच की परेड देखी हूबहू देखी, ईमानदारी के साथ। मैंने कहा सच बताओ तुम बिस्तर पर थे या कहीं और? बिस्तर पर। आंख बंद थी या खुली थी। आंखें तो बंद थी। तो देखा किसने? देखने वाला और है। देखने वाला कोई और है। वो इन आँखों से अधिक देखता है। अधिक दूर की देखता है। इसलिए हर ऋषि यहीं बैठे त्रिकालदर्शी हो जाते हैं। तीनों काल को जान लेते हैं। भूत, भविष्य, वर्तमान को जान लेते हैं। अभी योगी लोग तो बीती हुई बात को जानते हैं, आने वाली बात को, दीवार की परे की बात को भी जानते हैं। उनके लिए कौन कठिनाई की बात है। इसलिए जिनके अन्त:चक्षु खुल गए हैं, वह इन चक्षुओं की अपेक्षा बहुत दूर तक की देखता है। बहुत साफ-साफ देखता है। इसी को सूरदासजी कहते हैं 'वदन प्रसाद-सदन दृगभरि लखि' आपका शान्ति से भरा हुआ चेहरा मैंने आंखें भर कर देख लिया है। 'सुख सन्दोह समायो' मैं सुख सागर में समा गया।

**हरी लीला गायों, जेहि सुनि**
**तनु पुलकित मानस धीर**

हरि लीला गाने से शरीर पुलकित हो गया। मन को बड़ी शांति मिली।

**सुधा समान वचन कहि पोषेउ**

अमृत जैसे वचनों से आपने हृदय का पोषण किया।

**सुमिरत सिय रघुवीर।।**

श्री रघुवीर को स्मरण करके आपने प्रजा का अमृत वचनों से पोषण किया। अब तो सूरदासजी ने कलम तोड़ दी। कहते हैं—

**श्री तुलसी सन्त समागम**
**अद्भुत अमल अनूप।**

तुलसीदासजी जैसे संत का समागम बड़ा अद्भुत दर्शन है। अमल बड़ा ही निर्मल। अनूप, जिसकी उपमा ही नहीं हो सकती।

**सूरदास जीवन फल पायो।**
**दरसन जुगल स्वरूप।।**

आज जीवन का मुझे सबसे ऊंचा फल मिल गया है। जीवन का सर्वोच्च फल क्या है? मोक्ष है। आज मुझे मोक्ष प्राप्त हो गया है। दरसन जुगल स्वरूप भगवान्

श्रीरामचन्द्र एवं जगज्जननी माता सीता का दर्शन हो रहा है। यही सूरदासजी की लेखनी कह रही है तुलसीदासजी के यश में।

तुलसीदासजी के एक चचेरे भाई थे। नाम था नन्ददास। बड़े कृष्ण भक्त थे जिनको एम.ए. के छात्र पाठ्यक्रम में पढ़ते हैं। वे कहते हैं—

**श्रीमद्‌तुलसीदास स्वगुरु भ्राता पद वन्दे।**
**शेष सनातन विपुल ज्ञान जिन पाई अनन्दे।।**

**रामचरित जिन कीन्ह ताप त्रय कलिमल हारी।**
**करि पोथी पर सही आदरेऊ आप पुरारी।।**

**राखी जिन की टेक मदनमोहन धनुधारी।**
**वाल्मीकि अवतार कहत जेहि सन्त प्रचारी।।**

**नन्ददास के हृदय नयन को खोलेउ सोई।**
**उज्ज्वल रस टपकाय दियो जानत सब कोई।।**

श्रीमद्‌तुलसीदासजी चचेरे भाई होने से मेरे भ्राता हैं, ज्ञान में ऊंचे होने से मेरे गुरु भी हैं। ऐसे गुरु-भ्राता के चरणों की वंदना करता हूं। शेष सनातन से विपुल ज्ञान प्राप्त करके उन्होंने आनन्द प्राप्त किया। तीनों तापों को दूर करने वाले, त्रिविध संसार ताप के भय को हरने वाले रामचरण की वंदना करता हूं।

शंकर भगवान् ने जिनकी पोथी पर सही करके आदर दिया। काशी के पंडितों ने कहा—क्या देशी भाषा में, बोलचाल की गंवारू अवधी भाषा में, भाषा में भी नहीं अवधी बोली में ग्रंथ रच के ले आया। अरे ग्रंथ तो देवभाषा में, संस्कृत भाषा में होना चाहिए। बोलचाल की भाषा में, गंवारू भाषा में कोई ग्रंथ होता है। उन्होंने उनका तिरस्कार करते हुए उनको सबसे नीचे, उसके ऊपर पुराण, फिर स्मृति, फिर वेद-उपनिषद् रखकर द्वार बंद कर दिए और प्रात:काल आकर पण्डे ने मंदिर का द्वार खोला तो देखा भगवान् ने भक्त का मान रख लिया है। क्योंकि उसमें सब ग्रंथों का सार है—नाना पुराणनिगमागमसम्मत व्याख्या। सब पुराण, निगम और आगम का सार था। अत: भगवान् ने उसे सबसे ऊपर कर दिया और सबसे ऊपर करके सत्यं शिवं सुन्दरम् लिखकर भगवान् का हस्ताक्षर भी हो गया। तो नन्ददास आगे कहते हैं—

**राखी जिनकी टेक मदन मोहन धनुधारी।**

मदन मोहनजी वंशी बजाने वाले थे, उन्होंने उसकी टेक रख ली। तुलसीदास के लिए धनुष बाण धारण करके।

**वाल्मीकि अवतार कहत**
**जेहि सन्त प्रचारी।।**

यहां नन्ददासजी ने कलम तोड़ने की बात कह दी।

**नन्ददास के हृदय नयन**

**को खोलेउ सोई।**

नन्ददासजी कहते हैं मेरी हृदयरूपी आंख को खोला है उन्होंने।

**अद्‌भुत रस टपकाय दियो**

**जानत सब कोई।**

हृदय नयन खोल करके अद्‌भुत रस, अमृत डाल दिया है, सारी दुनिया जानती है। मुझे इन्होंने ही ज्ञान दिया है।

प्राय: होता क्या है? एक ही काल में दो पंडित हों तो प्राय: ईर्ष्या-द्वेष भी करते हैं। एक उक्ति है, एक पंडित दूसरे पंडित को देखकर कुत्ते की तरह भों-भों करके गुर्राने लगता है। लेकिन तुलसीदासजी की उस काल के सभी साहित्यकार वन्दना गा रहे हैं।

आचार्य श्रीमद् स्वामी मधुसूदन सरस्वती तुलसीदासजी के समकालीन थे। वे तुलसीदासजी की प्रशस्ति में कहते हैं—

**आनन्दकानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसीतरु:।**
**कवितामंजरी यस्य रामभ्रमरभूषितां।।**

अर्थात् आनन्द कानन में कोई तुलसी नाम के चलते-फिरते वृक्ष (गोस्वामी तुलसीदास जी) हैं, जिनकी कवितारूपी मंजरी पर सदा रामरूपी भौंरे गूंजते रहते हैं। वाल्मीकि के लिए कहा गया है—

**कूजन्त: रामरामेति मधुर: मधुराक्षरम्।**
**आरुह्य कविताशाखा वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।**

वाल्मीकि रूप कोकिल मधुर-मधुर राम-राम कुंजन करती है, किस प्रकार से? कविता रूपी शाखा पर बैठकर। कौन कुंजन कर रहा है? वाल्मीकि नामक कोकिला। कोकिला की उपमा क्यों दी है? स्त्री कोकिला कौए के बासा (घर) में अण्डे देती है। अण्डे फूटने के समय बसन्त ऋतु में कोकिल कुहू-कुहू करके पुकारती है कि ऐ मेरे प्रिय बालक-गण तुम लोग कोकिल के बच्चे हो, काग के नहीं। कौए का साथ प्राप्त कर स्वयं को कौए का बच्चा जानकर दु:खी मत होना। आओ, चले आओ। आम्र मंजरी के रसपान के लिए तुम्हारा जन्म हुआ है। विष्ठा भोगी कौए की संतान तुम नहीं हो। इस संसार में आकर जीव अपना स्वरूप भूल गया है। इसलिए वाल्मीकि कहते हैं, अरे ओ जीव! मां के पेट से जन्म लेकर संसार की विष्ठा को चाटने के लिए तुम्हारा जन्म नहीं हुआ। 'उत्तिष्ठित! जाग्रत'

उठो! जागो! ब्रह्मानन्द के रसपान के लिए, रामनाम के रसपान के लिए। इसलिए वाल्मीकि को कोकिल कहा गया है।

गोस्वामी तुलसीदास चमत्कारी चलमान भक्त हैं। एक शाखा अनेक प्रशाखा, अनेक मंजरी अनन्त सुधा, अनन्त भ्रमर उसमें गुंजन कर रहे हैं। स्वयं राम नाम का अमृत पान करके अन्यों को पान कराने के लिए वाल्मीकि हुए थे, किन्तु तुलसीदास का आविर्भाव हुआ था अगणित भक्तों को राम नामामृत पान कराने के लिए। उन्होंने राजा के महल से आरम्भ करके गरीब की झोपड़ी पर्यन्त राम नाम को पहुंचा दिया।

एक और बहुत बड़े कवि, फारसी के कवि, अरबी के कवि, संस्कृत के कवि खानखाना अब्दुल रहीम, अकबर के नवरत्नों में एक थे। तुलसीदास के मित्र थे।

एक दिन तुलसीदासजी के पास एक ब्राह्मण आकर बोला उसकी लड़की के विवाह के लिए कुछ सहायता करें। तुलसीदासजी ने कहा मेरे पास राम नाम और यह लोटा छोड़कर कुछ नहीं है भाई। पर मेरा एक धनी मित्र है। मैं उसको एक पत्र लिख देता हूं, उसको लेकर जाओ तुम्हारा काम हो जाएगा। यह कहकर पत्र में एक पंक्ति लिखकर दे दी। कहा कि इससे वह समझ जाएगा कि क्या लिखा है।

**सुरतिय नरतिय नागतिय यह चाहत सब कोय।**

अर्थात् देवता, मनुष्य, नाग सकल जाति की माताएं यही चाहती हैं कि मेरी लड़की किसी अच्छे घर में अच्छे वर के साथ विवाह करके सुखी होवे।

पत्र लेकर ब्राह्मण देव रहीम के पास पहुंचा। रहीम समझ गए। अब्दुल रहीम खानखाना बेराम खान का पुत्र था। बेराम खान काबुल से बाबर के साथ आया था। उनका जन्म भारत में हुआ था। उन्होंने पत्र की दूसरी पंक्ति इस प्रकार पूरी कर दी—

**गोद लिये हुलसी फिरे तुलसी सो सुत होय।।**

अर्थात् सकल माताएं यही चाहती हैं कि तुलसी जैसा सुत होवे। साथ में पर्याप्त धन दिया।

एक बार बादशाह अकबर ने रहीम की परीक्षा लेने के लिए उसको राणा प्रताप के विरुद्ध युद्ध करने भेज दिया। जिस प्रकार भीष्म पितामह पाण्डवों की विजय कामना करते किन्तु, कौरवों के सेनापति होकर वीरता के साथ युद्ध भी करते थे। उसी प्रकार रहीम भी मन से प्रताप की विजय चाहता था। पर बहादुर की तरह मुगल सेनापति होकर राजपूत सैन्य को गाजर-मूली की तरह काटता था।

भीलों ने प्रताप के पक्ष में युद्ध किया था। वे लोग मुगलों की कुछ बेगमों को उठा लाए राणा प्रताप के पास। उन्होंने कहा मुगल लोग हमारी मां-बहनों,

बेटियों को उठाकर ले जाते हैं इसलिए हम भी उनकी मां-बहनों को उठाकर ले आये हैं। प्रताप ने कहा, अरे! जंगली मूर्ख दल। तुम लोगों ने यह क्या सर्वनाश किया। रणक्षेत्र में तो हम जीते किन्तु चरित्र के क्षेत्र में तो हम हार गए। तुम लोग महिलाओं को क्यों उठा लाए? मर्द तो मर्द के साथ युद्ध करते हैं, स्त्रियों को स्पर्श करने की क्या आवश्यकता थी। इसके पश्चात् प्रताप ने जाकर बेगमों को प्रणाम करते हुए कहा, जो मस्तक कभी अकबर और मुगलों के सामने नहीं झुका वह आज क्षमायाचना के साथ झुक रहा है। फिर उन सबको पुरस्कृत एवं अलंकृत किया और सम्मान के साथ उनको उनके पतियों के पास भेज दिया।

उन बेगमों ने कहा—हम लोगों ने सुना है कोई पैगम्बर, मसीहा या खुदा का प्रेरित दूत संसार में आता है। किन्तु हम लोगों ने उसको देखा नहीं था। हां, आज के प्रतापजी को हमने प्रत्यक्ष देखा है। आप सचमुच के देवदूत हैं। आज हम समझ सके कि मनुष्य किस प्रकार से फरिश्ता (देवदूत) होकर रहता है।

बेगमों के ससम्मान वापस जाने पर रहीम ने राणा प्रताप को लिखकर भेजा—

**धर्म रहसि रहसि धरा, खिस जासी खुरसाण,**
**अमर विश्वम्भर ऊपरे, रखियो निहचो राण।**

हे राणा प्रताप! धर्म रहेगा तो धरा भी रहेगी, यह खुरसाण (मुगल) तो नष्ट हो जाने वाला है। इसलिए अमर विश्वम्भर भगवान् महादेव पर अपना दृढ़ निश्चय रखकर संघर्ष करते जाओ।

आज प्रश्न उठता है कि भारत के मुसलमानों की समस्या का क्या हल है? क्या रहीम ने मार्गदर्शन नहीं किया? यदि भारत के मुसलमान मुसलमान रहते हुए भी रहीम तथा रसखान के समान भारत एवं भारतीयता के भक्त रहते तो क्या भारत माता खण्डित हो पाती?

यदि हम पुनः रहीम-रसखान के जीवन से आलोक लेकर कर्तव्यपथ का निर्धारण कर सकें तो खण्डित देश के पुनः अखण्ड होने की उज्ज्वल आशा भारत के भाग्यक्षितिज पर मुस्कराने लगे।

भारत की वाणी समन्वय की वाणी है जो मानवों के विविध स्वभावों, रुचियों, योग्यताओं की रक्षा करते हुए उनमें अन्तर्निहित एकता को पुष्ट करने वाली है। गीता की तरह रामायण भी समन्वय का ग्रंथ है। ज्ञान, कर्म, भक्ति की त्रिवेणी एक साथ बही है। इसलिए न केवल भारत में, न केवल एशिया में वरन् पूरे विश्व में समादृत है। विश्व मनीषा ने इस पर मुग्ध होकर अपना सारा जीवन खपा कर अपने-अपने देश की भाषाओं में इसका अनुवाद किया। विश्व के अनेक देशों में इस पर प्रतिवर्ष नाटक खेले जाते हैं।

स्वयं अब्दुल रहीम खानखाना भी अपनी तप:पूत लेखनी का अर्घ्य चढ़ाते हैं—

**रामचरितमानस विमल, सन्तन जीवन प्राण।**
**हिंदुवान को वेद सम, यवनन प्रगट कुरान।।**

हिन्दुओं के लिए वेद के समान, मुसलमानों के लिए कुरान के समान है। रहीम बड़ा अद्‌भुत महाकवि था। ईमानदारी की बात यह है कि राम ने उत्तर और दक्षिण भारत को एक किया। कृष्ण ने पूर्व और पश्चिम को एक किया। इसलिए राम और कृष्ण हमारे राष्ट्रपुरुष हैं, भारतीय राष्ट्र के निर्माता हैं। आध्यात्मिक पुरुष, आध्यात्मिक विभूति एवं धर्म के आदर्श होने के अतिरिक्त वे राष्ट्र पुरुष हैं। इसलिए हर भारतीय को चाहे वह किसी पंथ को मानने वाला हो, किसी मजहब को मानने वाला हो उसको राम और कृष्ण के चरणों में शीश झुकाना ही पड़ेगा। अन्यथा वह भारतीय नहीं रह सकता। अब्दुल रहीम खानखाना राम भक्ति के गीत गाता था। इबादत भी करता था। कुरान भी पढ़ता था। इसमें कोई आपत्ति नहीं। राम कृष्ण की भक्ति अनिवार्य है। यह न करे तो ठोकर मार कर बाहर निकाल दो। इस देश में कोई बस नहीं सकता, जी नहीं सकता। राम-कृष्ण की निन्दा करके इस देश का वासी बना रहे तो भारत भारत नहीं रह सकता, राम-कृष्ण के बिना। भारतवासी नहीं हो सकता कोई राम-कृष्ण के बिना क्योंकि वे देश के निर्माता हैं, उन्होंने देश का निर्माण किया। वे राष्ट्रपुरुष हैं। रहीम एवं रसखान ने जो रास्ता बताया यह मुसलमानों के लिए ठीक रास्ता है। उस रास्ते पर चलने से हमारी मातृभूमि के टुकड़े नहीं होते। दुर्भाग्य से इस रास्ते को छोड़ दिया गया है। जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत भूमि के टुकड़े हुए। और आज पुन: उसके और टुकड़े करने के लिए योजना बन रही है। जब साढ़े तेईस प्रतिशत थे तब देश का सत्ताईस प्रतिशत हिस्सा काटकर दे दिया गया। हमने मां को काट कर बांट दिया। वे कहते थे ये नापाक लोग हैं, ये अपवित्र लोग हैं। हमें पाकिस्तान दे दो। इनके साथ नहीं रहेंगे। हम पाकिस्तान बनाएंगे, पवित्र देश बनाएंगे, पाक देश बनाएंगे। ये नापाक हैं। हमारे मूर्ख और अदूरदर्शी नेताओं ने मातृभूमि को काटकर चौथाई हिस्सा दे दिया। सत्ताईस प्रतिशत भूमि दे दी।

अब ईमानदारी से बताओ बिना किसी पंथ, सम्प्रदाय या पूर्वाग्रह के ईमानदारी से न्याय के निकष पर विवेक की कसौटी पर कस कर बुद्धि से बताओ क्या उसके पश्चात् भी उनका इस देश में रहने, या खाने का कोई अधिकार बनता है? फिर भी छाती पर पालकर रखे गए। यहां जो साढ़े तीन करोड़ बचे थे, आज 1981 की जनगणना में साढ़े उन्नीस करोड़ हो गए हैं। जब वे दस करोड़ थे तो मातृभूमि का एक-चौथाई भाग काट लिया। अब 19 करोड़ हो गये और राम-

कृष्ण को पूजे नहीं, राम-कृष्ण से वैर करें तो इस देश की क्या गति होगी? इन बच्चों का भविष्य क्या होगा? मैं मीनाक्षीपुरम में गया। वहां क्या हुआ? मदुराई से सवा सौ मील दूर गांव है मीनाक्षीपुरम्। वहां ईसाइयों की तरफ से एक अनाथालय चलता था। उस अनाथालय में लगभग सवा सौ बच्चे, अभागे हिन्दू बच्चे! उनको वहां रखकर ईसाई बनाया जाता था। वहां पर अमेरीका की Colgate Co. है, जिसका Colgate Toothpaste, साबुन आदि हम प्रयोग करते रहते हैं। Colgate Co. ने उस अनाथालय को एक Printing मशीन दान में दी। बहुत अच्छी, उच्च कोटि की Printing मशीन थी। ताकि बच्चों को कुछ छपाई का काम सिखाया जाए। छपाई से अनाथालय की आय होवे। उन्होंने Printing के काम शुरू किए। बढ़िया काम मिला। उन्हें लाभ हुआ मशीन तो बहुत उच्च कोटि की है और दान में आई हुई है। बाकी कोई खरीदे तो उस पर 200 प्रतिशत कस्टम ड्यूटी लगेगी। यह गिफ्ट के तौर पर अनाथाश्रम को दी गई अतः ड्यूटी फ्री आ गई।

पादरियों ने सोचा इस पर यदि हम नोट छापें तो बढ़िया नोट छपेंगे। उन्होंने जाली नोट छापने का धंधा शुरू किया। नोट छपने लगे। नोट बाहर कैसे निकले। तो अरब के व्यापारी, अरब के शेख, मुस्लिम व्यापारी उस क्षेत्र में रहने वालों से मिलकर उन नोटों की गड्डियों को बाहर निकालते। मार्केट में मुस्लिम व्यापारी निकालते। उस छापाखाने में कुली, मजदूरी करने वाले अधिकांश गरीब हिन्दू हरिजन थे। छपाई का काम करते पादरी, ईसाई लोग। मेहनत मजदूरी करते हिन्दू हरिजन और बाहर निकालने का कार्य करते यहां के एवं अरब के मुस्लिम व्यापारी। अचानक उस गांव में किसी हिन्दू की हत्या हो गई। उस हत्या की खोज के लिए पुलिस के लोग आए। और कुछ लोगों को पकड़ा। उनकी पिटाई शुरू की। उसमें एक नशे में था। उसने कहा हुजूर हमारा कोई दोष नहीं है। दोष पादरियों का है। वे लोग छपाते हैं। पूछने आये हत्या के बारे में और वह बता रहा है कि छापते हैं। तब पुलिस ने कहा, क्या छापते हैं? हुजुर! नोट छापते हैं। हम तो वहां मजदूरी करते हैं। तब यह सुराग का पता चला। सरकार सो रही थी। कई महीनों से यह धंधा चल रहा था। सरकार को पता ही नहीं था। अचानक नशे वाले व्यक्ति ने बक दिया। तो उसकी खोज की तो नोटों की गड्डियां ही गड्डियां स्टॉक में मिली। अब पादरी, मुस्लिम व्यापारी के साथ हरिजन कार्यकर्ता भी गिरफ्तार हुए। ईसाइयों के 76 देश हैं। जब ईसाइयों पर संकट आता है तो 76 ईसाई देश एक हो जाते हैं। उन्होंने दबाव डालकर रिश्वत खिलाकर पादरियों को छुड़ा लिया। मुसलमानों के पीछे अरब के शेख हैं, उनके पास बड़ा धन है। मैं बगदाद होकर के आया हूं। वहां पेट्रोल एक पैसा लिटर मिलता है। यहां पौने सात रुपया लिटर मिलता है। सात सौ गुणा अधिक दाम आप से लिया जाता है। बगदाद में किसी पेट्रोल

पम्प पर स्कूटर, मोटर साइकिल ले जाकर स्वयं दो लिटर पेट्रोल लें तो कोई चार्ज नहीं। जैसे भारत में म्युनिसिपिलिटी के नल के नीचे बालटी भरकर पानी ले जाएं। उसका कोई टैक्स नहीं है। वैसे ही दो लिटर के लिए कोई खर्चा नहीं। बड़ी गाड़ियों के लिए एक पैसा लिटर। ईरान में अभी एक पैसा लिटर था। अभी खुमैनी ने छह पैसा लिटर किया है। सोचिये, आपसे कितना पैसा लूटा जाता है। वहां 1 पैसे की चीज है और लगभग फ्री है। एक पैसा तो नाम मात्र का रखा है। यहां आपको सात रुपया देना पड़ता है। लोगों ने इन पैसों से रिश्वत देकर मुस्लिम व्यापारियों को बचा लिया। पादरी बच गए, मुस्लिम बच गए। रह गए बेचारे हिन्दू हरिजन। अब मुस्लिम व्यापारियों ने पुलिस को और पैसे दिए कि हरिजनों की खूब पिटाई करो। पुलिस तो मारने में राक्षस है। फिर मारने के लिए पैसा मिलता है तो कहना ही क्या? मारना तो उनका स्वभाव है। उन्हें खूब मार मिलती रोज। रो-रो कर, मार खा-खा कर उनकी हिम्मत टूट गई। उन्हें किसी ने नहीं छुड़ाया, न ही जमानत मिली। निराश हो गए। तब मुस्लिम व्यापारी उनके पास पहुंचे। देखो भाई! काम कराते थे पादरी। वे सब छूट गए हैं। उनके पीछे 76 ईसाई देश खड़े हैं, नोट निकालते थे हम लोग। हम सब छूट गए। हमारे पीछे 50 मुस्लिम देश खड़े हैं। तुम मजदूर हो। तुम्हें इन जाली धंधों से कोई मतलब नहीं था। तुम्हें तो 2-4 रुपए दैनिक मजदूरी मिलती थी। तुम फंसे हुए हो। तुम्हें हिन्दुस्तान का हिन्दू भी, कोई बचाने वाला नहीं है, अगर तुम लोग मुस्लिम बन जाओ तो तुम्हारा भी ये पुलिस के लोग कुछ नहीं कर सकेंगे। जैसे हमारा कुछ नहीं कर सकते वैसे तुम्हारा भी कुछ नहीं कर सकेंगे। तुम्हारे ऊपर 50 मुस्लिम देश छत्रछाया की तरह रहेंगे। तब उनकी हिम्मत टूटी हुई थी। कई महीने से मार खाते-खाते वे टूटने की स्थिति में आ चुके थे। मुक्ति का और कोई उपाय नहीं रहा। तब उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। 500 रुपया प्रति व्यक्ति देकर धर्मान्तरण 950 लोगों का कर दिया। बच्चों को घर से जबर्दस्ती खींच-खींच कर लाया गया। उन्हें मुस्लिम बनाया गया। बच्चों का नाम शिवलिंगम था तो उसका नाम रखा गया अलाउद्दीन। मुहम्मद गोरी, मुहम्मद अली जिन्ना, जिन्होंने सोमनाथ के शिव मन्दिर को तोड़ा था, जिन्होंने बार-बार देश को लूटा, देश को विभाजित किया। जो कल तक शिव भक्त थे आज उन्हें शिव द्वेषी जबर्दस्ती बनाया गया। बच्चे चीखते-चिल्लाते रहे। बच्चों की जबर्दस्ती सुन्नत कर दी गई। इसके पीछे षड्यंत्र क्या है? षड्यंत्र यह है कि खाड़ी के मुस्लिम देशों की एक कान्फ्रेंस हुई लंदन में। कांफ्रेंस में बड़े-बड़े वैज्ञानिक, टेक्निशियन, एक्सपर्ट बैठे थे। विचारक थे, व्यापारी थे। उनमें विचार हुआ कि जितना तेल का स्टॉक है अरब देशों में वह धीरे-धीरे सूख रहा है, कम हो रहा है। समुद्र के अन्दर में या समुद्र पानी के तल के नीचे के लेवल में समुद्र का जो करेन्ट है वह कावेरी देशों की तरफ जा रहा है। भारत के पश्चिम भाग की

ओर जा रहा है। 20 साल के बाद खाड़ी के देशों में पेट्रोल बिल्कुल नहीं रहेगा। और भारत के पास 20 साल के बाद खूब पेट्रोल हो जाएगा। यह सम्वाद अरब देशों के पास वायरलैस से भेजा गया। अरब देश बड़े चिंतित हुए कि भाई, बीस साल बाद हम क्या खाएंगे? अभी तो हम पैसे से शेख बन गए हैं। हम जिसको चाहें खरीद सकते हैं। हमारे पास पैसा भरपूर है। बीस साल बाद हमारे बच्चे क्या खाएंगे? हमारे यहां तो धान नहीं होता। हमारे यहां गेहूं नहीं होता। हमारे यहां तो मरुभूमि है। सारा अनाज बाहर से मंगवाते हैं। दूध बाहर से मंगवाते हैं। वहां मटर 26 रुपया किलो बिकता है। वहां पालक साग 24 रुपये किलो बिकता है अरब में, कुवैत में। उन्होंने Proposal (प्रस्ताव) भी दिया एक हरी सब्जी का जहाज रांची से कुवैत जाया करे। इससे भारत को बड़ी आय हो जाएगी। 26 रुपया मटर बिकेगा, 24 रुपया पालक बिकेगा। पर जगन्नाथ मिश्रा ने कहा—नहीं, हमारे पास यह सम्भावना नहीं है। धान वहां होता नहीं, सब्जी वहां होती नहीं, तो जब तेल भी समाप्त हो जाएगा तब क्या वहां बालू खाएंगे? लंदन की कांफ्रेंस से अरब को यह सम्वाद भेजा गया वायरलैस से। पर अमेरीका ने बीच में इस सम्वाद को मोनिटर कर लिया, स्नेप कर लिया। उसे intelligence department और अमेरीका के खुफिया विभाग ने प्रकाशित किया तब भारत के खुफिया विभाग को पता लगा। उसके संदेश की फोटो कॉपी भी हम लेकर आए हैं जिससे पता लगता है कि उनकी चिन्ता क्या है? फिर उन्होंने विचार किया कि अब क्या किया जाए? जिस किसी देश में उपजाऊ भूमि हो वह खरीदी जाए। अरब के शेख अब भारत में उपजाऊ जमीन खरीद रहे हैं। कोचीन में एक हिन्दू होटल समुद्र तट पर था। वह लेने के लिए अरब के शेख ने कहा, मैं पांच करोड़ रुपया देता हूं। होटल मुझे दे दो। उसने कहा, पांच सौ करोड़ रुपया देगा तो भी मैं होटल नहीं दूंगा। तो उन्होंने आसपास की भूमियां लेनी शुरू की। और उन्होंने कावेरी बेल्ट की भूमि के साथ-साथ दक्षिण में कुछ भूमियां खरीदी। कावेरी को River of Gold कहते हैं, सोने की नदी कहते हैं। उपजाऊ भी भरपूर है। सारी दक्षिण भारत की उपज कावेरी के कारण है। कावेरी के तट पर सोने का खजाना भी है। खास-खास Gold Mines भी हैं। मैसूर के सोने के खजाने कावेरी के तट के साथ-साथ हैं। कावेरी के तट पर सोना पहले ही था। अब सोने के साथ-साथ पेट्रोलियम भी हो जाएगा। तब यह भारत की सबसे बड़े भाग्य की नदी बन जाएगी। इसलिए यदि हम भूमि खरीदेंगे, तेल निकल आएगा तो भूमि सरकार लेगी, हम भूमि के नियमों के अनुसार उसे भोग नहीं सकते। सरकार उसको Nationalise कर लेगी। अत: भूमि में पैसा नहीं लगाएं। मनुष्यों में पैसा लगाएं। तीन-चौथाई देश अभी हिन्दुओं के पास है। एक-चौथाई देश का इस्लामीकरण हो गया है। वहां 12 करोड़ हरिजन लोग हैं। उनको फुसलाकर-बहकाकर यदि हम मुसलमान बना लेवें तब पहले ही 19-20 करोड़

हो गए हैं और ये 10-12 करोड़ और हो जाएंगे तब हम लोग पाकिस्तान से भी और बड़ा भाग इनसे लेंगे।

तब हम केवल भूमि के किरायेदार नहीं रहेंगे। सरकार के नियमों के अधीन हम केवल भूमि के भोक्ता नहीं रहेंगे वरन् हम स्वयं भूमि के मालिक बन जाएंगे। इस योजना के अन्तर्गत पैसा लगाकर मीनाक्षीपुरम में, मदुराई में एवं अन्यत्र धर्मान्तरण कर रहे हैं। स्पष्ट है कि इस भूमि पर आकर, इस भूमि पर रहकर, इसी भूमि का नाश करने के लिए, इसी मातृभूमि को नष्ट करने के लिए षड्यंत्र रचते हैं। मूल कारण क्या है? वह यह है, इस देश की राम-कृष्ण की जो परम्परा है उसको नष्ट करना। इतिहास गवाह है कि 1000 सालों से उन्होंने यही किया। राम जन्मभूमि को तोड़कर मस्जिद खड़ी की। कृष्ण जन्मभूमि को तोड़कर मस्जिद खड़ी की। काशी विश्वनाथजी के मन्दिर को तोड़कर मस्जिद खड़ी की। विश्वनाथ के लिंग के ऊपर पांव रखकर ओरंगजेब ने नमाज पढ़ी। भारत के मन्दिरों की बड़ी-बड़ी सुन्दर मूर्तियों को वहां से तोड़कर लाया गया और मूत्रालयों, पाखानों में लगाया गया ताकि इन लोगों का मल-मूत्र इन देवताओं के मुखों में पड़ता रहे। नालन्दा के विश्वविद्यालय को जला दिया। नन्हे-नन्हे बच्चों को दीवार में चुना। गुरु तेग बहादुर का सिर काटकर चांदनी चौक पर लटका दिया। आरी से चीर डाला उनके शिष्य को। गुरु अर्जुन देव को तपते हुए तवों पर जलाया। क्या-क्या पाप नहीं किए इन लोगों ने? सब पाप किए इन लोगों ने क्योंकि इनको इस देश की संस्कृति से नफरत थी। रहीम और रसखान ने क्या किया? उन्होंने कहा हम नमाज भी पढ़ें, कुरान भी पढ़ें, इबादत भी करें पर राम-कृष्ण पर भक्ति भी अटूट रखें।

राम-कृष्ण की भक्ति से हम कभी विचलित नहीं होने देंगे क्योंकि इस देश के राष्ट्रीय महापुरुष यही हैं। इस देश के निर्माता राम-कृष्ण हैं। इसलिए मैं कहता हूं राम-कृष्ण के प्रति भक्ति राष्ट्रीयता की प्रथम कसौटी है। जो यहां का नागरिक है उसे राम-कृष्ण के प्रति राष्ट्रीय स्तर पर भक्ति रखनी चाहिए। व्यक्तिगत भक्ति, व्यक्तिगत मुक्ति के लिए कुरान पढ़ें, नमाज पढ़ें, हमें कोई आपत्ति नहीं। राष्ट्र के हित से कोई वैर नहीं होना चाहिए। अगर यह होगा तो वह भारत में नागरिक नहीं हो सकता। इसकी चर्चा मैंने इसलिए की कि रहीम एक आदर्श व्यक्ति था। मुसलमान होते हुए भी भारतीय संस्कृति का भक्त था। अकबर के समय रहीम चलता रहा। हिन्दू का यश गाता रहा। पर जहांगीर के समय जहांगीर ने रहीम की सब सम्पत्ति छीन ली। कहा, यह हिन्दू का यश गाता रहता है और सब सम्पत्ति छीन ली। रहीम कहता है—

**तब ही लौं जीबो भलो, दीबो होय न धीम।**
**जगमें रहिबो कुचित गति, उचित न होय रहीम।।**

तब तक ही उसका जीना सफल है जब तक कि देने में कमी न आयी हो। देने में धीमा नहीं है। संसार में कंजूस की गति से मुझे जीना अच्छा नहीं लगता। चित्रकूट पहुंच गया। तुलसीदासजी ने पूछा त्रिचकूट कैसे आ गए? रहीम ने कहा—

**चित्रकूट में रमि रहे, रहीमन अवध नरेश।**
**जा पर विपदा परत है, सो आवत यहि देश।।**

कहा कि भगवान् श्री राघवेन्द्र (मर्यादा पुरुषोत्तम) उनको राजतिलक के दिन, राजतिलक से वंचित करके धकेलकर दण्डकवन में निकाल दिया गया तो वे भी चित्रकूट आए। उन पर विपत्ति आयी तो वे भी चित्रकूट आए। गोस्वामी तुलसीदासजी, आप पत्नी के काम में अंधे हुए। आधी रात को यमुना पार करने के लिए तैरती हुई लाश को आपने नौका समझ लिया और लटकते हुए अजगर सांप को रस्सा समझकर ऊपर चढ़ गए। पत्नी ने आपको फटकार मारी, अस्थि चर्म में आपकी ममता ऐसी, अगर यही प्रीति राम संङ्ग होती तो आप भवसागर तर जाते। धिक्कार है ऐसे प्रेम को। आपको धिक्कार किया तो आप पर विपत्ति पड़ी, घर से निकाल दिया तो आप भी चित्रकूट आए। मेरा सारा राज्य, मेरी सारी जागीर, मेरी सारी सम्पत्ति जहांगीर ने छीन ली है। इतनी विपत्ति आयी है। जा पर विपदा पड़त है सो आवत यहि देश। राष्ट्रीय मुसलमान होने से विपत्ति आने पर चित्रकूट आया। जो विपत्ति पड़ने पर गायेगा कि मेरे मौला बुला ले मदीना में मुझे, वह अराष्ट्रीय है।

चित्रकूट की याद किसको आएगी? जो भारत का है। जिसने कभी मक्का-मदीना देखा नहीं उसका गीत गा रहा है तो देशद्रोही बनेगा। देशद्रोह बुरी चीज है। कुरान पढ़ने में, नमाज पढ़ने में कोई बुराई नहीं है। पर राम-कृष्ण के प्रति भक्ति रखनी होगी। इस देश के प्रति भक्ति रखनी होगी। वहां मन्दाकिनी नदी है। मन्दाकिनी नदी में एक हाथी स्नान कर रहा है। बड़ी सुन्दर जलक्रीड़ा कर रहा है। सूंड में जल भरकर फव्वारे की तरह जल को फेंक रहा है। जलक्रीड़ा करके वहां से निकला है। और निकला साफ सुथरा होकर। और फिर कामद पर्वत की परिक्रमा करने लगा। कामद पर्वत है जो सारी मनोकामनाएं पूरी करता है। तो वहां धूल भरकर अपनी सूंड से धूल के फव्वारे मारने लगा। और सारे शरीर में धूल भर ली। किसी ने रहीम से पूछा क्या बात है? तब रहीम ने कहा—

**धूर धरत निज सीस पर, कहु रहीम केहि काज,**
**जेहि रज मुनि पत्नी तरी, सो ढूंढ़त गजराज।**

गजराज ने अपने सिर पर धूल क्यों डाली? बात क्या है?

**गौतम ऋषि पत्नी तरी**
**ते रज ढूंढ़त गजराज।**

तो भगवान् रामचन्द्र के चरणों की पावन धूलि जिसके स्पर्श से अहल्या का उद्धार हो गया था, उस धूलि को गजराज खोज रहा है। भगवान् के चरणों की धूलि मेरे मस्तक पर भी लग जाए, मेरा भी उद्धार हो जाए।

गोस्वामीजी ने कहा—अच्छा, रहीम चलो गंगाजी चलेंगे। काशी चले गए। काशी में गंगा स्नान के पश्चात् गोस्वामीजी ने कहा—रहीम! मां भगवती गंगा से लोग भक्ति, मुक्ति मांगते हैं। तुम भी कुछ वरदान मांग लो। तब रहीम बोला—

**अच्युत चरण तरंगिणी, शिव सिर मालती माल।**
**हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इन्दव भाल।।**

कहा कि अच्युत के चरणों से तरंगित होने वाली, विष्णु भगवान् के चरणों से प्रवाहित होने वाली गंगा, शिव के मस्तक पर मारुति माला के समान शोभायमान होने वाली है। गंगा तुमसे लोग मुक्ति मांगते हैं, मुक्ति तो मैं भी मांगता हूं, मुक्त करके तू मुझे हरि न बनाना, विष्णु मत बना। यदि विष्णु बना दोगी तो विष्णु के तो चरणों में गंगा रहती है, मां मैं नहीं चाहता कि तू मेरे चरणों में रहे। तो मां गंगे हरि मत बनाना। तो मुझे क्या बनाना? जिसके मस्तक पर चन्द्रमा, जिसके सिर पर गंगा मां लहराती है, वह शंकर भगवान् बना देना। मुक्त करके बनाना तो शिव बनाना। ताकि हे गंगा मैया, मैं तुझे अपने शीश पर सदा धारण करूं। पांव पर नहीं। यह गंगा के प्रति उनकी इतनी अपार भक्ति थी।

Nationlist मुस्लिम Nationlist मुस्लिम कहते रहते हो। Nationlist मुस्लिम खोजो तो सही। एक बार सरदार पटेल ने जयेन्द्र से कहा था कि हमारे देश में केवल एक राष्ट्रीय मुसलमान है और वह है पंडित जवाहरलाल नेहरू। इस प्रकार से देखें तो रहीम, रसखान का रास्ता सही रास्ता है पर हम वह रास्ता भूल गए, रास्ते से भटक गए। दूसरा रास्ता पकड़ लिया। मातृभूमि की हत्या करवा दी और नई हत्या के लिए पुनः खड़े हो गए। इसलिए इन बातों की विशेष चर्चा की जरूरत पड़ती है कि समझो भाई यह रास्ता। इस रास्ते से हिन्दू मन्दिरों में उनकी कवितायें गायी जाती है, उनका यश हम गाते हैं। क्यों गाते हैं? क्योंकि वे मुसलमान रहते हुए भी, रसखान मुसलमान रहते हुए भी भारत का था। रहीम ने तुलसीदासजी से एक प्रश्न किया। क्या प्रश्न किया? प्रश्न बड़े मार्के का है। उत्तर भी बड़ा मार्के का है।

**काज करे संसार के, मिलन चाहत करतार।**

भई, लोग कार्य तो करते हैं संसार का, बही-खाता लिखता है, माल तौलता है, कपड़े मापता है, लेन-देन करता है। यह करता है, वह करता है। दुनिया के धंधों में लगा है।

काज करत संसार के, मिलन चाहत करतार। तो समस्या क्या है? तब रहीम कहते हैं—

**कहो रहीम कैसे निभे, दो रथ एक सवार।**

रथ दो हैं। एक करतार का रथ और एक संसार का रथ। सवार एक है जो संसार के कामों में लगा है और करतार से मिलना चाहता है। दो रथों के बीच में आदमी धड़ाम से नीचे जा गिरेगा। उसको दोनों में से कुछ नहीं मिलेगा। तुलसीदासजी से मार्गदर्शन मांगते हुए कहते हैं—

**काज करे संसार के, मिलन चाहत करतार,**
**कह रहीम कैसे निभे, दो रथ एक सवार।**

तुलसीदास ने उत्तर दिया। बड़ा मार्मिक प्रश्न है। उत्तर सुनकर आप चकरा जाएंगे।

## काज करे संसार के

संसार के सब कर्तव्य करो। परिवार का पालन करो, बच्चों का पालन पोषण करो, दुकानदारी करो, व्यवसाय करो, पैसा कमाओ। संसार के सब कर्तव्य करो—'काज करे संसार के, प्रभु पर राखे टेक'—भगवान् पर विश्वास रखे कि मैं भगवान् का काम कर रहा हूं। सब संसार के काम करो। बच्चों को प्यार कर रहा है तो बाल मुकुन्द को प्यार कर रहा है। मेरा कृष्ण, मेरा कन्हैया बार-बार यह भाव रखे। ग्राहक मेरा देवता है। रविदास जी जूता गांठते थे। जूते के एक-एक टांके के साथ ओम-ओम, राम-राम, हरि-हरि गाते थे और कोई भक्त मिला। बद्रीनारायण जा रहा है तो जूता दे देते थे। हर कर्म में प्रभु मेरे आश्रय हैं, प्रभु मेरी प्रेरणा हैं, प्रभु के लिए कर रहा हूं और जगत् के जितने सम्बन्धी रूप हैं सब प्रभु के रूप हैं। सब नारायण रूप हैं। इस बच्चे से व्यवहार करते समय यह नारायण रूप है। यह नाराज न हो जाए। इस ग्राहक को ठगूं तो भगवान् नाराज हो जाएगा। किसी की जेब नहीं काटूं, किसी का गला नहीं काटूं। किससे नाराज हो रहे हो? अत: किसी के प्रति बुरा भाव न लाऊं—

**काज करे संसार के, प्रभु पर राखे टेक।**
**तुलसी यों निभ जायेंगे, दो घोड़े रथ एक।।**
**और कर से करो कर्म विधि नाना, मन राखो प्रभु कृपा निधाना।**

रथ एक है, घोड़े दो हैं। एक संसार का घोड़ा और एक भगवान् का घोड़ा। दोनों लगा दो। और वेग से दौड़ेगा। चिन्ता मत करो। यह है जीवन का क्रियात्मक रूप, क्रियात्मक पक्ष, जिससे संसार का व्यवहार सुन्दर रीति से चले और भगवान् की वंदना भी चले। भगवान् पर अटल श्रद्धा भी रखें। इससे संसार धर्म भी बढ़िया ढंग से चले। भगवान् पर अटल श्रद्धा रखते हुए, ईमानदारी से चलो। भगवान् ने गीता में कहा—

**'तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।** 8/7, गीता

हे अर्जुन! तू सब कालों में मेरा स्मरण करता हुआ युद्ध कर।

भगवान् को सब समय स्मरण करेंगे—राम-राम-राम करेंगे तब युद्ध में मारो-मारो कैसे करेंगे? कैसे किसी का वध करेंगे? यानी युद्ध कैसे करेंगे। तो भगवान् ने कहा—हां, दोनों का समन्वय करना है। सब समय स्मरण करते हुए युद्ध करो जैसा अर्जुन ने किया। अर्जुन ने कैसे किया? भगवान् को स्मरण कर युद्ध किया। भगवान् को भूलकर युद्ध करेगा तो आततायी, अत्याचारी बन जाएगा। राक्षस बन जाएगा और दूसरों के साथ अन्याय करेगा। जो केवल भगवान् को स्मरण करता रहेगा, वह युद्ध भूल जाएगा। वह पोंगापंथी बन जाएगा। आडम्बर वाला बन जाएगा। संसार के लिए बेकार बन जाएगा। मंदिर में पड़ा है। समाज मरे या जीये, हमारा इससे क्या है? वह संसार के लिए बेकार। केवल माला जप रहा है तो इससे संसार को क्या लाभ? केवल भगवान् को स्मरण करेगा, कर्तव्य छोड़ देगा तो ढोंगी बनेगा। और कर्तव्य करेगा भगवान् को छोड़ देगा तो अनाचारी, दुराचारी बन जाएगा।

**इसलिए युद्ध और यज्ञ में समन्वय हो।**
**इसलिए शक्ति और शील में समन्वय हो।**

संसार और करतार में समन्वय हो। यही है जीवन का व्यावहारिक दर्शन। इसको गीता ने दिया है, तुलसीदास ने दिया है संसार को। उन गोस्वामी तुलसीदास के विषय में वीर सावरकर ने कहा है—रामायण लोकतंत्र का महानतम महाकाव्य है। लोकतंत्र का सबसे बड़ा महाकाव्य रामायण है। क्यों? क्योंकि भगवान् श्रीरामचन्द्र, मर्यादा पुरुषोत्तम, अयोध्यापति ने एक केवट को गले लगाया, आंसुओं से भिगो रहे हैं केवट को, भीलों से, निषादों से, बंदरों से, भालुओं से, शबरी से सबसे प्रेम से मिल रहे हैं। शबरी के जूठे बेर खा रहे हैं—

**जात पांत का गर्व न हो, सत्य प्रेम का मान करे।**
**शबरी के जूठे बेर खाये, केवट के घर जलपान करे।**
**मानवता का मान रहे, हे राम! तुम्हारा ध्यान रहे।**

राम ने मर्यादा सिखायी है। इसलिए यह लोकतंत्र का सबसे बड़ा महाकाव्य है। जब तक रामायण है जीवित, तब तक लोकतंत्र का नाश नहीं हो सकता। और एक बहुत बड़े मार्के की बात कही। देश पर 12 सौ वर्षों तक विदेशी शासन रहा। इस्लाम की तलवार लगभग 1000 वर्ष चलती रही। मंदिर तोड़े गए, बच्चों को दीवारों में चुना गया। लोगों को तेल के कड़ाहों में भून दिया गया। गरम तवों पर जलाया गया, आरों से चीरा गया। बहुत अत्याचार हुआ। रमणियों पर बलात्कार हुआ, सब कुछ हुआ। फिर भी भारत बचा रहा क्योंकि उसके पास रामायण थी। रामायण ने भारत को जीवित रखा। भारत में विदेशियों ने बहुत मंदिर तोड़े। बहुत विश्वविद्यालय जलाए। बहुत कुछ नाश किया। पर उन्होंने रामायण पर प्रतिबंध नहीं लगाया। अगर रामायण पर प्रतिबंध लगाते तो भारत का सर्वनाश हो जाता। भारत भारत रहा तो रामायण के कारण। भारत रामायण से जीवित रहा। यानी भारत जीवित रहा तो रामायण के कारण। अत: रामायण भारतीय जीवन की संजीवनी है।

रांची में एक पादरी है, पादरी बुल्के। उन्होंने रामकथा उत्पत्ति और विकास नाम का ग्रंथ लिखा। उसमें उन्होंने लिखा, 'छोटानागपुर रामायण काल की लंका थी और उरांव लोग रावण की संतान है। उनका उरांव नाम ही रावण से पड़ा। हमने उज्जैन आदि कान्फ्रेंस में कुछ अच्छा खण्डन किया है। कुछ पत्रों में भी बहुत लिखा है। और मंचों पर भी उसे अच्छी तरह लताड़ा है।

दिल्ली से एक पत्र निकलता है सरिता। सरिता एक मासिक पत्र है। उसने एक लेखमाला निकाली तुलसीदास हिन्दू समाज के पथप्रदर्शक नहीं पथभ्रष्टक हैं। वह सदैव हिन्दू समाज के विरुद्ध कुछ न कुछ लिखता रहता है। कभी वेदों के बारे में, कभी संन्यासी के बारे में, कभी संतों के बारे में, तो कभी तुलसी रामायण के बारे में। हर अंक में कुछ न कुछ जरूर छापता है। यह एक ऐसे व्यक्ति का पत्र है जो भारत विद्वेषी है, जिसने जिद बांध रखी है, हठीला आदमी है। उसका दुराग्रह है कि हम जरूर कुछ न कुछ आलोचना करेंगे। हम उसे जानते हैं। दिल्ली में कई बार उसके प्रेस का घेराव भी किया, पथराव भी किया। वह कई बार जेल भी गया। जेल में माफियां भी मांगी। पर वह ढीठ आदमी है, बाज नहीं आता। हमने उससे कहा, तुझे तुलसी ही आलोचना करने के लिए मिला है, हिन्दू समाज ही मिला है आलोचना करने के लिए? इस देश में रहते हो? क्या तुझे मुसलमान समाज में कोई दोष दिखाई नहीं देता। कभी एक लेख इस्लाम पर छापो। एक लेख इस्लाम की आलोचना में छापो हजरत मुहम्मद के बारे में। H.G. Wells Noble prize winner ने जो-जो लिखा है उसी को केवल उतार कर (इन्वर्ट्रेड कौमा) अपनी पत्रिका में छापो, उसी दिन तुम्हें छुरा मारकर खलास कर देंगे। उस दिन तुम्हारा प्रेस भस्म हो जाएगा। हिन्दू अनाथ, अभागा है। उसे जो आये थूक दिया। जो आये

गाली दे दिया। क्या भीम अर्जुन की संतान में, राम-कृष्ण की संतान में इतना बल नहीं बचा है जो उसे डांट सके, डरा सके। ऐसा पाप मत करो नहीं तो मार खाओगे।

हमारा बड़ा दुर्भाग्य है। हम परम उदार रहे। हमने सबको उदारता दी। परमवीर थे, शक्तिशाली थे, तब हमारी उदारता हमारा भूषण थी। आज दुर्बल की उदारता उसका दूषण बन जाती है। आज उदारता दूषण बनी हुई है। आज जो आता है हिन्दू को लात मारता है तो मैं कहता हूं चन्द्रमा पर थूकने पर थूक किसको लगेगा? थूकने वाले को लगेगा। वह पत्र कहता है तुलसीदास ने समाज को पथभ्रष्ट किया। अरे! तुलसीदास ने हिन्दू समाज को पुनर्जीवित किया, मृतप्राय समाज को प्राण-दान दिया। तुलसीदास ने पुनः हिन्दू समाज को जगद्गुरुत्व का गौरव दिया। तुलसीदास की कृपा से भारत से साढ़े सात हजार मील दूर फिजी में, भारत से साढ़े चार हजार मील दूर मारीशस में, भारत से 12 हजार मील दूर गिआना और सूरीनाम हिन्दू बहुल क्षेत्र हो गये हैं, वहां हिन्दी राजभाषा हो गई है। तुलसीदास की कृपा से वहां राज्य बदल गए हैं, हिन्दू राज कर रहे हैं और तुम कहते हो तुलसीदास ने पथभ्रष्ट किया। अरे! तुम स्वयं पथभ्रष्ट और मतिनष्ट हो। इसलिए तुलसी तुम्हें पथभ्रष्ट दीखते हैं। तुम स्वयं पथभ्रष्ट हो और तुलसीदास पर कीचड़ उछालने में लगे हुए हो! ऐसे लोगों से सावधान रहने की आवश्यकता है। कुछ दिन पहले उसने अपने पत्रों में विज्ञापन दिया—'तुलसी हिन्दू समाज के पथभ्रष्टक'।

हम थोड़ा विचार करें कि इतना बड़ा दान किसने दिया? एक दुनिया के सबसे बड़े महाकंगाल का यह सबसे बड़ा महान् दान है। वह चार चने के लिए तरसता था। वह कहता है—

**दाने के ललाट विलाट विलख द्वार-द्वार दीन,**
**जानत है चार फल चार चनेन को।**

मैं बिलखता रोता हुआ द्वार-द्वार भीख मांगता हूं। चार चने के दानों को चार फल—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष समझता हूं। ऐसे अभाव में पलकर, दुःख में पलकर कूकर-सूकर घात लगाही। जिन कुत्तों के लिए जो टुकड़े फेंके जाते थे उन कुत्तों के लिए फेंके जाने वाले टुकड़ों के लिए ललचाता रहता था। यह मुझे मिल जाए क्योंकि मुझे कोई भोजन नहीं देता था। मैं जब कहीं पंगत में, लंगर में, किसी भोज में, भोजन के लिए बैठता था तब सब लोगों को पूड़ी पकवान बंटता था पर जब मेरी बारी आती थी तब लोग कान ऐंठकर, लात मारकर, धक्का देकर निकाल देते थे। कहां से यह आ गया है? ऐसे अमंगल समय एवं लक्षणों के साथ जन्मा कि जन्मते ही मां-बाप को खा डाला। चुनिया दासी ने पाला। वह मर गई। जिसके घर बैठेगा उसी का नाश करेगा। स्वयं तुलसीदास ने लिखा जन्मते ही जिसके माता-पिता चल बसे और विधाता ने जिसके भाग्य में कुछ भी नहीं लिखा—

**मातु पिता जग जाई तज्यों,**
**बिधिहि न लिखी कछु भाल भलाई।**

ऐसा जिस बच्चे के साथ व्यवहार होता रहा, जिसको भोजन नहीं मिला। चार चने के दाने नहीं मिले। कुत्तों को फेंके जाने वाले टुकड़े तक उच्छिष्ट तक नहीं मिले।

ऐसी निर्धनता और कंगाली की दशा में भी तुलसीदास गद्दार नहीं हुआ।

हिन्दू गण ने मुझे कुछ दिया नहीं इसलिए मैं उनको न गाली दूंगा और न अभिशाप ही और न धर्म त्याग करूंगा। केवल करुणा करूंगा एवं आशीर्वाद दूंगा। ऐसा अमृत मैं दूंगा ताकि मृत्युकाल में भी यदि एक चम्मच पान करें तो अमर पद लाभकर कृत-कृत्य हो सकेगा। यह है तुलसीदासजी का संकल्प।

जिसने इतना हलाहल विष पीकर समाज को इतना महान् अमृत दिया। मैं मरूं तो मर जाऊं पर समाज जीवित रहे, अमर रहे। हे मेरे प्यारे हिन्दू समाज तुम कभी मत मरना, तुम जीओ, तुम जीओ। हम हजार बार मरें, तुम कभी मत मरो। समाज को चिरंतनजीवी बनाने वाला यह महापुरुष है। इसलिए उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकते।

इसलिए रामचरितमानस है संसार के सबसे बड़े कंगाल का सबसे बड़ा महान् दान। इसलिए भगवान् के पास सिर्फ प्रार्थना करता है। हे भगवान्! जीवन में मैंने जो पाया है मेरा दान उससे अधिक होवे। हम संसार से लेते हैं ज्यादा और देते कुछ भी नहीं। किन्तु देना ही जीवन की सार्थकता है, कृतार्थता है।

हमारे पूर्व पुरुष तो हमारे लिए वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, पुराणादि-शास्त्रों के साथ एक महान् संस्कृति हमको दे गए। किन्तु, हम लोग अपने भविष्य के वंशधरों के लिए क्या रखकर जा रहे हैं? हिन्दू समाज को बचाने के लिए श्रीराम-कृष्ण, ऋषि-मुनिगण तो सर्वस्व दे गए। किन्तु, हम लोग क्या देकर जा रहे हैं जिससे हिन्दू समाज की रक्षा होवे, उसकी सभ्यता संस्कृति का विकास होवे। इसलिए हमारा एकमात्र कर्तव्य है कि हम लोग सभी अपने जीवनपुष्प को भारत माता की पूजा की वेदी पर अर्पण करें।

संसार में वही पूज्य है, वे ही धन्य हैं जो दे तो गए सब कुछ, पर प्रत्याशा कुछ भी नहीं की। श्रीकृष्ण कारागार में जन्मे, कोई भी उसके मंगल गीत नहीं गाये गये। टेलीग्राम करके किसी ने बधाई नहीं भेजी। षष्ठी के दिन पूतना स्तनों में विष लेकर हाजिर। किन्तु, कृष्ण मरे नहीं। समस्त विद्रोह को स्तब्ध कर शेषपर्यन्त धर्मराज्य की प्रतिष्ठा करके गए।

मेरा एक प्रगतिशील लेखक मित्र है। वे स्वयं को कम्युनिस्ट एवं प्रगतिशील विचारधारा का उत्तराधिकारी मानते थे। मेरी कथा सुनकर एक कविता कही—

**तन की हविस मन को गुनहगार बना देती है**
**बाघ के बाघ को शर्मसार बना देती है।**
**ओ भूखे पेट को कुरबानी सिखाने वालों**
**भूख इंसान को गद्दार बना देती है।**

मैंने कहा—आपकी रुबाई तो उत्तम है। किन्तु, उसका भाव हलका है। उन्होंने कहा कैसे? मैंने कहा—सुनो!

**तन की क्षुधा मन के इरादों को**
**गिरा सकती नहीं।**
**भूख की ज्वालायें आदर्शों को**
**खा सकती नहीं**
**घास की रोटी खाने वाले**
**प्रताप और तुलसी को**
**भूख हरगिज गद्दार बना सकती नहीं।**

हां, वे घास की रोटी खाते थे। किन्तु, फिर भी वे देशद्रोही नहीं बने। देश को अपना अमर दान दे गए।

तुलसीदासजी के समय दयनीय स्थिति थी राजपूतों की। उन्हें यह बोध ही नहीं रह गया था कि कौन स्वदेशी है? कौन विदेशी है या अराष्ट्रीय है? कौन इस देश की रक्षा और निर्माण में लगे हैं? कौन इस देश की संस्कृति को नष्ट कर देश को विदेश बनाने में लगे हैं? यही स्थिति आज पूरे भारत की हो रही है—पता ही नहीं चल पा रहा कि भारत भारत के रूप में शेष रहेगा भी या नहीं।

सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दों में—

**आशा की लता शुष्क हो गई है, झुलस गई है।**
**लोग उदास निराश हो गए हैं। भारत का क्या होगा?**
**हिन्दुत्व बचेगा या नहीं, देश का क्या होगा?**
**हमारी आने वाली पीढ़ी का क्या होगा।**
**लोग हताश निराश हो गए हैं।**
**हे प्रभु! फिर भेज दो एक तुलसी एक तुलसी।**

**मैं केहि कहौं बिपति अति भारी। श्रीरघुबीर धीर हितकारी।।1।।**
**मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तहँ बसे आइ बहु चोरा।।2।।**
**अति कठिन करहिं बरजोरा। मानहिं नहिं बिनय निहोरा।।3।।**
**तम, मोह, लोभ, अहँकारा। मद, क्रोध, बोध-रिपु मारा।।4।।**
**अति करहिं उपद्रव नाथा। मरदहिं मोहिं जानि अनाथा।।5।।**
**मैं एक, अमित बटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा।।6।।**
**भागेहु नहिं नाथ! उबारा। रघुनायक, करहुँ सँभारा।।7।।**
**कह तुलसिदास सुनु रामा। लूटहिं तसकर तव धामा।।8।।**
**चिंता यह मोहिं अपारा। अपजस नहिं होइ तुम्हारा।।9।।**

**—श्री गोस्वामी तुलसीदासजी विरचित**

विनय पत्रिका

पद-संख्या 125

× × ×

## शेक्सपियर या तुलसी...???

भारत के प्रथम ब्रिटिश गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग ने एक बार कहा था कि 'यदि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए और दूसरे में शेक्सपियर के साहित्य को रखा जाए और मुझसे पूछा जाए कि मैं किसे अधिक मूल्यवान समझता हूँ तो मैं भारत—जैसे विशाल देश में ब्रिटिश साम्राज्य को ठुकरा दूंगा, किंतु मैं अपने महाकवि शेक्सपियर को कभी नहीं त्यागूंगा।'

आज भारत जैसे स्वतंत्र राष्ट्र के कोटि-कोटि जनगण को इंग्लैण्ड ही नहीं, वरन् सारे विश्व को बता देना चाहिए कि यदि इंग्लैण्ड का ही नहीं, वरन् सारे संसार का साम्राज्य भी किसी तुला पर अवस्थित कर तौल दे, तो भी हम अपने राष्ट्रकवि सन्त तुलसीदास की तुलना में विश्व साम्राज्य को ठुकरा देंगे, किंतु अपने तुलसी को नहीं त्यागेंगे।

**—प्रो. हरवंशलाल ओबराय**

# राणा प्रताप को नैतिक बल प्रदान करने वाले सन्त श्रीचन्द्र

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव के ज्येष्ठ पुत्र, उदासीन सम्प्रदाय के महान् सन्त पुण्यश्लोक श्री श्रीचन्द्राचार्यजी का जन्म भाद्रपद मास की शुक्ल नवमी के दिन संवत् १५६१ में हुआ था। इस चमत्कारी सन्त ने पेशावर, काबुल, कंधार, सिंध और पंजाब में स्मार्त वैदिक धर्म का प्रचार किया। जनता को शासन के अत्याचार से बचाया। कहा जाता है कि जब गुरु नानक देवजी ने गुरु गृह की गद्दी गुरु अंगद देव को दे दी तो श्रीचन्द्रजी ने उपहास में कहा कि 'हुआ क्या यदि गद्दी किसी कोढ़ी कराइ' को दे दी हो।'इस बात से ही कहा जाता है कि दूसरी बादशाही से लेकर ५वें गुरु तक सभी गुरुओं की अंगुलियों में कोढ़ के चिह्न पाए जाते थे। गुरु अर्जुन ने श्रीचन्द्रजी से मिलकर यह कोढ़ क्षमा करवाया था। अमृतसर का सरोवर बनाने के पीछे भी बाबा श्रीचन्द्रजी की ही प्रेरणा थी। गुरु अर्जुन देव ने जब तरनतारन का सरोवर बनवाया तो बार-बार उसका पानी बह जाता था। कहा जाता है कि बाबा श्रीचन्द्रजी ने उसे एक बावली से मटका भरकर वहाँ ले जाने को कहा तब कहीं सरोवर का पानी ठहरा। श्रीचन्द्रजी के जीवन की एक घटना जो प्रायः इतिहास के प्रकाश में अभी तक नहीं आई है, वह है उनकी महाराणा प्रताप से भेंट। उन दिनों मेवाड़ केसरी वन-वन घूम रहे थे। श्रीचन्द्रजी ने उन्हें स्वप्न में दर्शन दिया। प्रातःकाल महाराणा प्रताप उनसे मिलने के लिए गए। श्रीचन्द्रजी ने प्रताप को नैतिक बल दिया तथा कहा कि जीत या हार तो सदा प्रभु के हाथ में है किन्तु धर्म के लिए युद्ध करने वाले पर ईश्वरीय आशीर्वादों की वृष्टि होती है। उन्होंने प्रताप को यह भी बताया कि प्रताप और वे (श्रीचन्द्रजी)—दोनों रघुकुल-गौरव रामचन्द्र महाराज की सन्तान हैं। लव और कुश की सन्तान ने जब लाहौर से प्रस्थान किया तो कुछ सन्तानें नेपाल में जा बसीं, कुछ राजपूताने में और कुछ काशी में जाकर वेद पढ़ने से वेदी कहलाईं। श्रीचन्द्रजी ने प्रताप को बताया कि आप राजस्थान के सूर्यवंशी राजा हैं और हम वेदाध्ययन के कारण वेदी कहलाने वाले सूर्यवंशी क्षत्रिय हैं। दोनों भगवान् राम की सन्तानें हैं और भाई-भाई हैं। इससे प्रताप का नैतिक बल बढ़ा और वह श्रीचन्द्रजी के प्रेम से गद्‌गद हो गया। कहा जाता है कि भामाशाह को प्रताप की सहायता के लिए सर्वस्व अर्पण करने की प्रेरणा देने वाले भी महान् सन्त बाबा श्रीचन्द्र ही थे।

# महर्षि वेदव्यास का राष्ट्रदर्शन

'भगवान् वेदव्यास भारतीय ज्ञान गंगा के भागीरथ हैं। जिस प्रकार इस देवनिर्मित देश को किसी पुरा-युग में भागीरथ ने अपने उग्र तप से गंगावतरण के द्वारा पवित्र किया था, उसी प्रकार पुराण-मुनि वेदव्यासजी ने भारतीय लोक साहित्य के आदि-युग में हिमालय के बद्रिकाश्रम में अखण्ड समाधि लगाकर अध्यात्म, धर्मनीति और पुराण की त्रिपथगा गंगा का पहले अपनी आत्मा में साक्षात्कार किया और फिर साहित्यिक साधना के द्वारा देश के आर्य-वाङ्मय को उससे पवित्र बनाया। ज्ञानरूपी हिमवान् के उच्च शिखरों पर बहने वाले दिव्य जलों को मानो वेदव्यास भूतल पर ले आए। उनके द्वारा पूर्वजों के ज्ञान और चरित्रों से गुम्फित सरस्वती लोक के कंठ में आ विराजी।' ज्ञानमार्तण्ड भगवान् वेदव्यास के पावन चरणों पर श्री वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा चढ़ाई हुई यह हृदयहारी भाव-प्रसूनांजलि कितनी अनूठी है।

जहाँ भगवान् वेदव्यास ने वेदों का विभाजन किया; महाभारत जैसे अगाध ज्ञान-भण्डार की रचना की; श्रीमद्भागवत महापुराण जैसे भक्ति के सुधा-सिंधु से मानवता के हृदय की क्यारियों को हरा-भरा कर दिया; वेदान्त दर्शन की रचना द्वारा विश्व मनीषा के मस्तक पर भारतीय तत्त्वज्ञान की विजय पताका फहराई; व्यास स्मृति, पुराण संहिता एवं अध्यात्म रामायण की सर्जना द्वारा विश्व के धर्म वाङ्मय को समृद्ध किया; वहाँ उन महामुनि व्यास ने भारतीय राष्ट्र की ऐसी अद्भुत वंदनाएं गाई हैं कि उनके श्रवणमात्र से आज भी भारतीयों के हृदय में मातृभूमि के अनन्त प्रेम का अगाध अमृतोदधि हिलोरे लेने लगता है।

### सौ-सौ स्वर्गों से श्रेष्ठ भरतखण्ड

विष्णु महापुराण में महर्षि व्यास का कथन है—

**गायन्ति देवाः किल गीतिकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।**
**स्वर्गापवर्गास्पद मार्ग भूते, भवन्ति भूयः पुरुषा सुरत्वात।।**

अर्थात् 'स्वर्ग के ३३ कोटि देवता भी यही गीत गाते हैं कि भारत भूमि पर जन्म पाने वाले लोग धन्य हैं। वे कितने सौभाग्यशाली हैं कि वे उस भारत में जन्मे हैं जो स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का स्वाभाविक सरल मार्ग है। अतः भारतखण्ड

के मनुष्य निश्चय ही हम देवताओं से भी ऊँचे हैं।' अभी तक तो मनुष्य देवताओं की स्तुतियाँ गाते थे पर धन्य हैं पूज्य ऋषि वेदव्यास, जिनके वाङ्मय में हम स्वर्ग के देवताओं को भारतभूमि की स्तुतियाँ गाते हुए पाते हैं। इससे ऊँची राष्ट्रभक्ति क्या हो सकती है जब स्वयं देवता भी राष्ट्र की झुक-झुककर वन्दनाएँ करते हों!

## भारत दर्शन ही भगवान् दर्शन

महर्षि वेदव्यास ने देशभक्ति तथा देवभक्ति का अद्भुत समन्वय किया है। भारत स्वयं भगवान् का देश है, प्रभु का दिव्य लीलाधाम है। यहाँ के मानवों की प्रशस्ति में, भारत में जन्म के लिए तरसते हुए देवता गाते हैं—

**अहो अमीषां किमकारि शोभनं, प्रसन्न एषां रिचदुत स्वयं हरिः।**
**यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे, मुकुन्द से वौपयिक स्पृहा हि नः।**

(श्रीमद्भागवत पुराण)

अर्थात् 'अहो! यह भारतवासी कितने भाग्यशाली हैं कि उन्हें स्वयं भगवान् के देश में जन्म मिला है। धन्य हैं ये कि इन्हें स्वयं अपने हाथों से भगवान् मुकुन्द की सेवा का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिसके लिए हम देवता तक भी तरसते रहते हैं।'

**पृथोस्तु राजवैन्यस्य तथेक्ष्वा कोर्महात्मनः।**
**ययातेरम्बरीषस्य मान्धातुन हुषस्य च।।**

**तथैव मुचुकुंदस्य शिवेरौशनीरस्य च**
**ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतेस्तथा,**

**कुशिकस्य च दुर्धर्ष गाधेश्चैव महात्मनः।**
**रोमकस्य च दुर्धर्ष दिलीपस्य तथैव च।।**

**अन्येषां च महाराज क्षत्रियाणा बलीयणाम्।**
**सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारतभारतम्।।**

अर्थात् 'आओ हे भारत! अब मैं तुम्हें भारत देश का कीर्तिगान सुनाता हूँ— वह भारत इन्द्र, मनु वैवस्वत, पृथुवैन्य, मांधाता, नहुष, मुचुकुन्द और औशीनर शिवि को ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक, गाधि, सोमक, दिलीप और अनेकानेक बलवान क्षत्रिय वीरों का प्यारा है।'

## जीवित राष्ट्र

भगवान् व्यास का कथन है **मृतं राष्ट्रमराजकम्**—अर्थात् अराजक (बिना राजा के) राष्ट्र मरे हुए के समान है। शान्तिपर्व में व्यासदेव का एक गीत है— 'यदि राजा न पालयेत।'

धर्म की जड़ राजा की सुव्यवस्था पर टिकी हुई है। राजा के बिना अराजकता फैल जाए तथा लोग एक-दूसरे को खा जाएं।

**राजमूलो महाप्राज्ञ धर्मो लोकस्य लक्ष्यते।**
**प्रजा राजमयादेव न खार्दात्त परस्परम्।**

अर्थात्, हे राजन्! धर्म ही लोक में राज का मूल है और राजा के भय से ही प्रजाएं एक-दूसरे को खा नहीं जाती हैं।

**राजधर्म**

व्यासदेव का अर्थगम्भीर वचन है—'जब राजा भली प्रकार दण्ड नीति का पालन करता है तभी सत्ययुग आ जाता है। राजा का आसन राष्ट्र का ककुद है। राजा की उस आदर्श आसन्दी की रक्षा में रहकर प्रजा जिस धर्म का पालन करती है उसका एक चतुर्थांश राजा को प्राप्त होता है।

**सर्वे त्यागा राज धर्मेषु दृष्टा, सर्वाः दीक्षा राज धर्मेषु युक्ताः।**
**सर्वा विद्या राजधर्मेषु चोक्ताः, सर्वे लोका राजधर्मे प्रविष्ठाः।।**

**प्रजा ही राजा है**

भगवान् व्यास ने राजतन्त्र के भीतर ही प्रजातन्त्र के महान् सिद्धान्त का समन्वय कर दिया—'राजा का शरीर प्रजाएं हैं। अपने आपको बचाने के लिए राजा को प्रजा की रक्षा करनी चाहिए। प्रजा का भी सर्वोत्तम शरीर राजा ही है। राजा को पुष्ट करके वे अपने-आपको ही बढ़ाती हैं।'

**राजा कालस्य कारणम्**

व्यासजी की लोकविश्रुत सूक्ति है—

**कालों वा कारणं राज्ञो राजा व कालस्य कारणम्।**
**इति ते संशयो मा भूद्राजा कालस्य कारणम्।।**

अर्थात् 'क्या राजा का कारण काल है या काल का कारण राजा, इस विषय में संशय मत करो। राजा ही काल का कारण है।' सच है कि कोई महान् प्रतापी राजा अपने आदर्श राज द्वारा काल के चक्के को जैसा चाहे घुमाकर सत्ययुग को ला सकता है।

**वीरभोग्या वसुन्धरा**

इस धरती को वीर पुरुष ही भोग सकते हैं, कायर नहीं। व्यासजी की नीति है—

**चराणां अन्नं अचराः द्रष्ट्रिणां अपि अदंष्ट्रिणः।**
**बुधानां अबुधाश्चापि शराणां चैव भीरवः।।**

अर्थात्, चर प्राणी अचरा भोजन करते हैं, दांतोंवाले बिना दांतों वालों को खा जाते हैं, समझदार लोगों के लिए मूर्ख ही भोजन है, शूरवीरों के लिए कायर ही भोजन है।

अतः राष्ट्रीय जीवन में कायरता एक लानत है, दुर्बल राष्ट्र को अन्य राष्ट्र खा जाएंगे।

**जाग्रत् युवक**

महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास का संदेश है कि जहाँ जवान जागते हैं वही राष्ट्र जागते हैं—

**युवक यत्र जागर्ति, युवको यत्र पश्चति।**
**तत्र राष्ट्र भवेन्मूनं सर्वदा सुख संयुतम्।।**

अर्थात्, जहाँ जवान जाग्रत है, जहाँ जवान आंख खोलकर देखते हैं वही राष्ट्र निश्चय ही सदा सुखी रहता है।

**भाग्य और भगवान् निछावर**

भगवान् व्यास ने हमारे सामने हरिश्चन्द्र और शिवि, मान्धाता एवं पृथु जैसे आदर्श नृपतियों के गौरवशाली चरित्र रखे जो अपनी प्रजाओं की किंवा प्राणीमात्र की सेवा के लिए भाग्य और भगवान् को भी निछावर करने को उद्यत हैं—

**न त्वहं कामये न स्वर्गं न पुनर्भवम्।**
**कामये दुःखतप्तानां प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।।**

अर्थात् 'हे प्रभो! मैं न तो राज्य की कामना करता हूँ, न स्वर्ग की तथा न ही मोक्ष की। मेरी तो एकमात्र यही कामना है कि मैं दुःख से तप्त प्राणियों के दुःख का नाश कर सकूँ।

भारत राष्ट्र का अनन्त यश गाने वाले राष्ट्रद्रष्टा महर्षि वेदव्यास का अपना यश भी अनन्त है। जब तक धरती सूर्य की प्रदक्षिणा करती है तब तक उनका यश रहेगा। वे भारत के गौरव सर्वस्व हैं। हमारा समस्त राष्ट्रीय गौरव ही उनके ज्ञान-चक्षुओं में समा गया है।

जैसे सागर में खड़ा हुआ मनुष्य सागर से ही जल का लोटा भरकर सागर को अर्घ्य चढ़ा देता है वैसे ही महामुनि वेदव्यास की पावन स्मृति में हम उन्हीं के ज्ञानोद्यान के दो-एक पुष्प सजल नयनों से उन्हीं के चरणों में सादर चढ़ाकर ही अपने वन्दना-व्याकुल हृदय की भावांजलि समर्पित करते हैं।

**21 जुलाई, 1959 को**
**दैनिक 'वीर प्रताप' में प्रकाशित**